

DPN 5844

Title : पूजाविधि PŪJA VIDHI

Run. No. 6535

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि / Religious
Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / ☒ New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

नेपालभाषा विदेशी एवं गुरुगुरु
Newa direction

Size in cms. 20.5 x 8.5

Folios 90

Lines (in a page) 6

Compl. / ☒ Incompl.

Extant folia
Chapt. / act /

72 — 255

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / ☒ Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : Mantra monogramme

Material : palmleaf / paper / ☒ thyaśaphu /

Condition : ☒ fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

लकनयस २ मान २ दू ३ रुट् मिनादूनी मिनसं पापू ॥ चणपाल ॥ नै दुं दुं दुं भिरवा
 दूतिभिरवायी पापू ॥ मिरवा ॥ नै ३ उरु लिवा सिमटि आसर्व पहर विस ३ ३ ३ ३
 टिआदिनी आदिउ नै रिवा आसर्व दूटल रिवा आधी कवच दूती कवचाय पापू ॥ वादू
 दू ॥ नै ३ नक नक मह नक वा मू ॥ पु न्वनी अवतन २ म्हा हाथी नव दूती नव दूथ पापू ॥
 मिरवा २ ॥ नै ३ युक् कृष्ण कं दू रुट् मम सर्व पडवान सयक्त मक्त नक्त दूर्ध्व प्रथा गदिका
 नयन दूतान् कानयिमान् कनिष्ठ कि दूर्ध्व कि किट किमान् सर्वान् हनू डी दू काना लिङ्ग

हने १

३३
 क्रीडंरुद्र उध कृद्विक अमुदूती अमुय रुद्र ॥ लादाया ॥ वामपाद अर्धपाज नृपाय य
 तद्वामपादेन तु मीता उत य ॥ श्वाद काष्ठ भिन सिधुमने ॥ जेडीपी कुक्षौ वपुमी न्यास ॥
 रक्षात्रिकाये पाद ॥ वलिगृह २ स्वाहा ॥ रुद्रयादिनां रुद्रैव भक्त ॥ तं यने भिनी ॥
 मकु सिद्धि रुद्रैदाता सर्वपापकथं करी ॥ माहर्षि सर्व नकु भि, स्वनादयादि ज्ञान द ॥
 स्वतन्त्रा सर्वदा श्रुषी, सर्वयुध विमर्दनी ॥ भक्त कथ रुद्र ॥ ॐ तिष्ठ शुक्ति न्यास ॥ ॥ न
 त ३ नत्त पंचक न्यास ॥ जे ३ वा गण्वनी नू नत्त गगन लोक गगर्ग भमिनी गगन लोक

३४
 ग अमृत सैवा निधी गगनानन्द दव गगन म्वा व ३ ४ सखि लक काटि सिद्धि व ३ ४ सखि लक
 काटिया गिनी पाद ॥ ललात ॥ जे ३ मायथे नू नत्त स्वर्ग लोक गगर्ग भमिनी स्वर्ग लोक
 क अमृत त ३ अ निधी स्वर्ग नन्द दव स्वर्ग म्वा वती सलक काटि सिद्धि वती सलक काटि
 या गिनी पाद ॥ क्रांतिका ॥ जे ३ माहनी नू नत्त पवन लोक गगर्ग भमिनी पवन लोक अ
 मृत सैवा निधी पवनानन्द दव पवन म्वा व ३ ४ लक काटि सिद्धि व ३ ४ लक काटिया
 गिनी पाद ॥ क ३ ४ ॥ जे ३ ज्ञानाथे नू नत्त मर्त्य लोक गगर्ग भमिनी मर्त्य लोक अमृत

तर्जवानभीमर्यानन्ददवमर्याम्बा अरुकाटिसिद्ध अरुलककाटिया गिनीपाद ॥ नारो
 ॥ जैंकी भूतत्र ॥ दुनील अनकलकलागगर्दगमिनी अनकलकअमृतसंबानभी
 अनका नन्ददव अनकाम्बा अनकलककाटिसिद्ध अनकलककाटिया गिनीपाद ॥ मू
 दि ॥ जैंकी शां भू सं भू ॥ मू ॥ श्रीनत्र पंचकन्या सरुछानकायपाद ॥ बलि ॥ गगनभेदि
 समस्तयु ॥ दुव ॥ नया ॥ विरुल ॥ फातकनाभितसर्व ॥ लरुगन्यासमापुत ॥ ४ ॥
 तिरुत्तपे ॥ अरुकाटिसिद्ध ॥ (॥ कसेतापहनन्यासरुल ॥ ॥ ततयन्किन्यास ॥ ॥

जैं हं अमकय गिपाददयपाद ॥ पालिनगुलि ॥ जैं हं कालगुलिगुलुदयपाद ॥
 गुठिनगुलि ॥ जैं हं नूदगुलिगुलुदयपाद ॥ कूकनगुलि ॥ जैं हं जगुयनिकुडनूद
 यपाद ॥ खलनगुलि ॥ जैं हं दूवामयनिकुटिदयपाद ॥ कलबूलनकसी ॥ जैं हं का
 मयगुलि लिङ्गया ॥ यपाद ॥ लिंगसा ॥ जैं हं पिपुयनिकुमडकांनपाद ॥ नारियाका ॥ वीज ॥
 जैं हं वुन्नयनिकुवन्नसूत्रनपाद ॥ नारिअतन ॥ मार्गस ॥ जैं हं सूर्ययनिकुनारोअ
 (॥ यपाद ॥ नारिनथ ॥ जैं हं सामयनिकुनारोपाद ॥ नारिस ॥ जैं हं दाययानिष्ठ

द्वयपादः॥ अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः दयपादः॥ नूबठसा जै ह्रीं विक्रयनिकि क
 (८४पादः॥ कथं सा जै ह्रीं नूदयं विदुः तालवपादः॥ अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः
 मूर्ध्नि स्नानपादः॥ अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः
 पादः॥ अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः
 नमो जै ह्रीं वयं विदुः अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः
 यः॥ वाचा सिद्धिपूजकः माता जीवतनाएवत् ॥ सहोदयवधपातकनासः कली॥

इति यनिकि न्यासरुली ॥ ॥ ततः प्रकाशनि न्यासः॥ जै ह्रीं वयं विदुः अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः
 कामः॥ जै ह्रीं वयं विदुः अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः
 सर्वोत्तमपादः॥ सकलः॥ जै ह्रीं वयं विदुः अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः
 पादः॥ पाठनपाः॥ जै ह्रीं वयं विदुः अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः
 प्रकाशनि न्यासः॥ जै ह्रीं वयं विदुः अथ नमो जै ह्रीं वयं विदुः
 नाशनः॥ पंचपातकनासरुली ॥ ॥ ततः प्रकाशनि न्यासः॥ ॥ ततः प्रकाशनि न्यासः॥

नमः

जेँ जेँ अस्त्राय रुट पादशा जेँ जेँ हृदयाय पादशा जेँ जेँ मिनस पादशा जेँ जेँ मि
 खाया पादशा जेँ जेँ कवचाय पादशा जेँ जेँ भुजाय पादशा जेँ जेँ अस्त्राय रुट पा
 दशा जेँ जेँ धुँ सो ३ प्रभवन्या सरुहानकाय पादशा ॥ बलि ॥ प्रभवपंचन्यासन पं
 चपातकनाम ॥ नी पंचरुमोभुरहली पंचवर्गकहली ॥ ॐ तिप्रभवन्यासः ॥
 ॥ कतः नवात्मन्यासः ॥ जेँ जेँ अस्त्राय रुट ॥ जेँ जेँ भुजाय नमः ॥ जेँ जेँ मिनस
 नीत्या नमः पादशा ॥ जेँ जेँ मन्त्रमात्या नमः पादशा ॥ जेँ जेँ अनामिकात्या नमः पाद

७९ जेँ जेँ यंकनिष्ठात्या नमः पादशा ॥ जेँ जेँ अस्त्राय रुट पादशा ॥ ॐ तिकनन्यासः ॥ जेँ जेँ
 हृदयाय नमः पादशा ॥ जेँ जेँ मिनस स्वाहा पादशा ॥ जेँ जेँ मिखाये वोसट पादशा ॥
 जेँ जेँ कवचाय दू पादशा ॥ जेँ जेँ भुजाय वसट ॥ जेँ जेँ अस्त्राय रुट पादशा ॥ ॐ यं
 गन्यासः ॥ जेँ जेँ मिखास्त्रान पादशा ॥ जेँ जेँ मिनस्त्रान पादशा ॥ जेँ जेँ लेलाट पादशा ॥
 जेँ जेँ मन्त्राय पादशा ॥ जेँ जेँ हृदयाय पादशा ॥ जेँ जेँ नाशपादशा ॥ जेँ जेँ गुह्यपादशा ॥
 जेँ जेँ जानी पादशा ॥ जेँ जेँ पादद्वय पादशा ॥ जेँ जेँ धुँ सो दू माँ नवात्मन्यासः
 ॐ नमः

हानकायपाद॥ बलि॥ नवात्मानमयन्यासी शृङ्खलिनिसनायिका॥ यस्तु दहगर्तना
 स॥ नवात्मानमहकसी॥ अस्त्यस्तनवाभाषणी दधुतपापपुनः॥ सद्यः श्रवविनि
 र्मुक्ताः ललितभक्तपद॥ अविनाशश्चवरीसिद्धिः शशिनीसमर्तुजगत्॥ दह
 कानववीजानि यथास्तनयविन्यसुते॥ ॐ नवात्मादहन्यास॥ ॥ ततो धा
 नाष्टकन्यास॥ कांकी कुंज ४ प्रसू नरहृदयाय नमः ४ पाद॥ हृदि॥ जैं धानरत
 नतनूर नूपचट २ भिनसस्वाहा॥ भिन॥ जैचट २ प्रचट २ भिरवाये वोचट्॥ मीनवा॥

जैकहरवमरकवचाय दुं पाद॥ कवचा॥ दमरघाट्य २ ननुतयाय वोचट् पाद॥
 भय॥ जैविघाट्य २ विष्टि २ दुं ४ रुद्रभुक्ताय पाद॥ जैं धानाष्टकन्यास
 हानकायपाद॥ बलि॥ ॐ तिधानाष्टकन्यास॥ ॥ नमस्तुतुनीवेव
 मातर्पितनीतथ॥ आठान्यासविहीनच आठान्यासनतानेय ४॥ आठान्यासवि
 हीनय प्रथमदवपावति॥ साविनास्तुत्यामाप्राति ननकचप्रपद्यत॥ विद्यानन्द॥
 प्रवयजत्सकान्यासी उक्त ४ पश्चिमभासन॥ चतुर्वर्गप्रद ४ सर्व विष्टिनाभकन

स्मृतं ॥ चतुष्टयं न्यसदृहं श्री सासन विभोसि तथा ॥ यः संसाकारं वत्सर्गं भिक्तः
 नाहर्कं वत्सनात् ॥ न्यासकानीति गुरुं पितृनममस्तु न ॥ तनतवीयथादृष्ट
 ४ सुगुणं पुनाहिमा ॥ सर्वरुद विहीनैर्न्याससिद्धिं कलवत् ॥ प्रथमं तस्य पा
 यानि सैजाना निदहं न्यमी ॥ जंजीं पीं कुं कुं कुं ॥ सर्वथा गन्या संपादना ॥ वसि
 ॥ विन्दुः ॥ ॥ इति साधना स समा ॥ ॥ तता वामतर्फी नीनाद मूला
 दातवीं निन सि पयं न पृथमं कनिधाय ॥ जंजीं कुं कुं कुं ॥ ४ प्रस्तुत रघा

ॐ सा कानन्द देव अहहा सा स्वयं पापू ॥ ४

नरतननर नूपर चत र प्रवत र कर र वम र धम र घात य र विघात य र विघिर दं र रु
 ट स्वाहा ॥ स्वात्मनि सि पूजने ॥ जंजीं गगना नन्द देव अ विलाम्बा देवी चा तुल अहहा
 सो स्वयं पापू ॥ जंजीं गगन मूकानन्द देव रागमामहनाम्बा देवी चा तुल अहहा सा स्व
 र्यं पापू ॥ जंजीं श्री क्री ज नन्द देव अहहा सा स्वयं पापू ॥ जंजीं श्री मानन्द देव अहहा सा
 स्वयं पापू ॥ जंजीं श्री सहजानन्द देव अहहा सा स्वयं पापू ॥ जंजीं श्री ठिका नन्द देव अह
 हा सा स्वयं पापू ॥ जंजीं श्री धनमानन्द देव अहहा सा स्वयं पापू ॥ जंजीं श्री देवानन्द देव अ

समलाम्बा देवी चा तुल ३

दहसास्त्रयंपादुग॥ जेऊं गणेशानन्ददेव अहसास्त्रयंपादुग॥ जेऊं गणेशानन्ददेव अ
 दहसास्त्रयंपादुग॥ जेऊं श्रीअपलानन्ददेव अहसास्त्रयंपादुग॥ जेऊं श्रीअपलानन्ददेव अ
 पदुग॥ वलि॥ जेऊं दयासनायपादुग॥ जेऊं सिंहासनपादुग॥ जेऊं अघानअमा
 धवनदविमलश्रीअवकायणीविश्वपादुग॥ जेऊं अघानअमाधवनदवीमल
 श्रीकंसाहन्वनीविश्वपादुग॥ जेऊं अघानअमाधवनदवीमलश्रीवैकोमानीविश्वपादु
 ग॥ जेऊं अघानअमाधवनदवीमलश्रीटंवेष्टवीविश्वपादुग॥ जेऊं अघानअमाधवनद

विमलश्रीतंवाहारिविश्वपादुग॥ जेऊं अघानअमाधवनदविमलश्रीपंरुन्दायणीवि
 श्वपादुग॥ जेऊं अघानअमाधवनदविमलश्रीयंवाभूषणविश्वपादुग॥ जेऊं अघानअमा
 धवनदविमलश्रीमंमहालक्ष्मीविश्वपादुग॥ जेऊं श्रीअपलानन्ददेव अहसास्त्रयंपादुग॥
 त्यावलिगृहस्वारा॥ जेऊं श्रीअनन्दभक्तिहेतवा नन्दश्रीवीनाधीपतयमुंज
 याभूषणविश्वपादुग॥ जेऊं श्रीअपलानन्ददेव अहसास्त्रयंपादुग॥ जेऊं श्रीअपलानन्ददेव अ
 पादुग॥ जेऊं श्रीअपलानन्ददेव अहसास्त्रयंपादुग॥ जेऊं श्रीअपलानन्ददेव अहसास्त्रयंपादुग॥

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

॥ जें झों पादुगा ॥ जें झों कठ पादुगा ॥ जें झों झों पादुगा ॥ पनमा करम मकु ॥ ॥ जें क
 झों धाम हा निर्वी ॥ पनमा नन्दनाथाय ॥ के के झों झों धी पनम निर्वी ॥ पनमा नीम
 ॥ किस हिताय पादुगा ॥ पनम महा निर्वी ॥ ॥ ॥ जें निर्वी नया विद्म ह निना
 क नाय धी मदि ॥ तन ८ सु झ पचा दया ॥ ॥ जें झ पादुगा ॥ जें झों जे लाक म न म
 नी क ॥ पनमा ॥ जें झों जे लाक म न पने मा क ॥ पनमा ॥ आ झों ॥ ॥ जें झ
 दू व झ क झों पाप ह ॥ के झय स्वाहा पादुगा ॥ जें झों पनम ॥ पाप ना सनाय

स्वाहा पादुगा ॥ पाप ह क म कु ॥ आवाहना दिवन्दना करम पूजा ॥ धूप दीप पुतिरुगा ॥
 पञ्चम हा मूडा दिवय ॥ अर्घ पाया द क नात्म भिन सि विन्दु ना सि चने ॥ जें नम धी
 नाथाय नम ॥ जें नम ८ धी सिद्धि नाथाय ॥ जें नम ८ धी कू ज म नाथाय नम ॥ जें
 झों पादुगा ॥ जें झों कि हीर विद्म कां क झये ८ अ म्नाय रु ॥ विसरुने ॥ आत्म भिन
 सि न पूर्य गृहीत्वा स्वर्गा र्थ क र्ण ॥ कि विरुष्य ॥ भिष्य त्या दात र्थ ॥ ॥ पनम
 र्थ आ ध्या र्ण कृत्वा व ल्या नि धाय ॥ ॥ साधने कान्त य ॥ तमा जल न वा की र्ण

तुलविन्दुनातर्थात्कान्त्यस्यैव ॥ जैगं अष्टाविंशतिकमाद्यानमष्टाविंशतिमष्टु
 ल ॥ नमस्तु चक्रवर्त्तिस्त्वनमस्तु पनेमष्टुन ॥ नमस्तु ते नवद्वे नमस्तु नदायक ॥
 अष्टाष्टकं वदकानी योगिनीनां तथेव च ॥ क्रयपालगं मदीनी गद्यपसर्वकं यका
 ॥ कूलचक्रमिदं सर्वं भकाकालनमास्यह ॥ अस्मदादीनां सगद्यपनिवा नाभा आ
 युनानां भवेद्युज्जनधनलक्ष्मी सक्तिसुक्तानादि वृत्त्यर्थे यथाकुरुलकामार्थं स
 मयचक्रं नमः पादग ॥ विन्दुत्रियं दद ॥ स्वीकारं कुर्यात् ॥ ॐ तिसाधनविधिः ॥

क्रमचक्रस्य पश्चिमदिशिका पालिकचक्रं गुणपकि पूजनी ॥ १ ॥ अव्ययधनं दृवने मया
 पुनर्जलपात्रसूत्रार्थयाज ॥ अधनं पूजापूर्ववज्ज ॥ आत्मसिंदनादि पूर्ववत्तु सनी ॥ ॥
 ततश्च गुणपकि पूजा ॥ रुकानादिनामः ॥ जैगं आधनाय कथं पापग ॥ त्यादि ॥ ॥
 गपद्मा सनाय पादग ॥ ध्यान ॥ जैगं ध्वतवर्षं च द्विचुर्जं दक्षिणं जायमानिकं ॥ वाम
 हस्तं त्रिकपात्रं कवकीयनिधानं ॥ भिनस्तितापनिधानं कृष्णं निनसचर्मकं ॥ यज्ञा
 सनस्तितां कर्क ॥ दध्नाधनसूदयक ॥ सर्वप्रतिचार्च्यं तन्त्रोमिगग ॥ ध्वने ॥ ध्यान
 पूर्यनमः ॥ जैगं श्रीगग ॥ नन्ददेवपादग ॥ जैगं श्रीगग ॥ सूकानन्ददेवपादग ॥ जैगं श्रीकी

[illegible]

तथा वायु काष्ठसौगताख्यचक्रोत्सधी पूजनं ।

दद्यादित्यास ४॥ जेण भावनमकस दि ८॥ जेण भावसनाये पाप ॥ ध्यान ॥ जेण
 भासनसुखासीने ॥ ध्वतवर्हि खिलानी ॥ विवकानक ॥ ध्वताउ पीतारुनसू ॥ भविनी
 ॥ जुगा एक महावीना ॥ दर्दतरव पुतर्नी ॥ उमन विभूल भूषे ॥ नीलात्यल समालक
 ॥ पाव विन्दूकन ॥ प्रहृ पीनान्नत पथाधना ॥ डासधी कुम ॥ तया जीविनी विन जीवि
 ती ॥ ध्यान पथी पासा ॥ जेण सुं सर्वजन कालनी पाप ॥ जेण सुं सर्वजन माहनी पाप ॥ जेण
 सुं सुं सर्वजन रुमनी पा ॥ प ॥ जेण सुं सुं सर्वजन रुमनी पाप ॥ जेण सुं सुं सर्वजन रुमनी पाप ॥

ॐ नमो आनन्दगकिरेनवानन्दवीनाधीपतयसु ॥ श्रीश्रीकृष्णनाथयस्वभक्तिसहि
तायपादुका ॥ जववलि ॥ शिष्टलयानिकु मूडीदर्थय ॥ विन्दुययदद ॥
ॐ तिष्ठ श्रीकृष्णार्चनी ॥ ॥ ततः सुमाटुकाग ॥ नमः पूजा ॥ न्यासः ॥ वाहदयादि ॥
जैगंगा ॥ धनाद्यष्टपूरिकासनायेपादुका ॥ जैगंगासासनायेपादुका ॥ धना ॥ जैगंगासा
सनायितादवी ॥ पीतांगीचवतुर्गुणी ॥ पूजाकविन्दुमूडी ॥ धनयवकायणीध्वनी
॥ धनपूर्यपादुका ॥ जयभूरलि ॥ जैगंगाधनअसाधवतदविमलपी ॥ अष्टककायणी

तथापूर्वपी० चक्रमाटुकार्चनी ४

विष्णुपादुका ॥ वलि ॥ यक्षमूडा ॥ विन्दुययदद ॥ ॐ तिष्ठकायलिपूजा ॥ ॥ ततः सुमा
हवनिपूजा ॥ मीहदयादिग्रन्थान्यासः ॥ जैगंगाधनादि ॥ जैगंगासासनायपादुका ॥
जैगंगासासनायितादवी ॥ धनयवकायणीचवतुर्गुणी ॥ पूजाकविन्दुमूडी ॥ धनयवकायणीध्वनी
॥ धनपूर्यनमः ॥ जयभूरलि ॥ जैगंगाधनअसाधवतदवीमलपीकंमा
हवनीविष्णुपादुका ॥ वलि ॥ शिष्टलमूडा ॥ विन्दुययदद ॥ ॐ तिष्ठमाहवनीपूजा ॥
॥ ततः कोमानीपूजा ॥ कीहदयादिन्यासः ॥ धनादि ॥ जैगंगामयनासनायेपा

५५
आधनादि० जे० गजासनाये पाप० ॥ ध्यान० जे० दिपासनसुतादीदी पीतीगी
चक्रकुंजी ॥ ध्यान० कविन्दुविन्दुसूडीच ॥ ध्यान० डायलीस्वरी ॥ ध्यान० पूर्यनम
० ॥ ध्यान० लि० जे० अधानअमाधवनदवीमलथीपें ० डायलीस्वरीपाप० ॥ व
लि० ॥ कृष्णसूडा ॥ विन्दुजयददउ ॥ ० ती ० डायलीपूजा ॥ ॥ तत० चामुण्डासूजा ॥
यां हृदयादिन्यास० ॥ आधनादि० ॥ जे० प्रतासनाये पाप० ॥ ध्यान० जे० प्रतस्का
चमरासेदी नकपु क्री गनूयिनी ॥ उमनूरवप्रहस्ताच कर्त्तिकापालचर्चिता ॥ ध्यान

५६
पूर्यनम० ॥ ध्यान० लि० जे० अधानअमाधवनदवीमलथीयें चामुण्डाये विष्णुपाप० ॥ व
लि० ॥ काशसूडा ॥ विन्दुजयददउ ॥ ० तित्वामुण्डापूजा ॥ ॥ तत० महालक्ष्मीपूजनी ॥
अं हृदयादिन्यास० ॥ आधनादि० ॥ जे० सिंहसनाये पाप० ॥ ध्यान० जे० सिंहसना
नकवर्ष्च रक्क हतकविन्दुना ॥ महालक्ष्मीमहादेवी ॥ ध्यान० पनमध्वरी ॥ ध्यान
पूर्यनम० ॥ ध्यान० लि० जे० अधानअमाधवनदवीमलथी ॥ महालक्ष्मी विष्णुपाप० ॥
बलि रक्कसूडा ॥ विन्दुजयददउ ॥ ० तिमहालक्ष्मीपूजा ॥ ॥ ० तिअरमात्रिकाप

रुक्मिणी स्वर्वांगी कर्णक ॥ विन्दुमूडा तथा सिद्धि ॥ आयतन गवती पनी ॥ सिंहसनम
 मानूटा ॥ महिषापाद वर्किता ॥ महिषासुर निहकीच ॥ सर्वदेव विनासिनी ॥
 आठबाठबाहूलाच ॥ स्वर्वांगदमनूकी विना ॥ नडचण्डाप्रचण्डाच ॥ चण्डाप्रचण्डाच
 का ॥ चण्डाप्रचण्डाच ॥ चण्डाप्रचण्डाच ॥ चण्डाप्रचण्डाच ॥ चण्डाप्रचण्डाच ॥
 प्रवाधिता ॥ शिवनाला नूला कूला ॥ नीलाशुक्राच धूमिका ॥ पीताचपाशुला ॥
 लीधस्त्राह निरुक्ता ॥ महिषाथपमीभम्बी ॥ तत्कन्यारुमूष्टिका ॥ स्त्रायवृत्तनपक्ष्या

वा ॥ उग्रचण्डादितकमाता ॥ जवन्मात्वा महादेवी ॥ महारुगवती नमः ॥ मुक्ता ॥ जिह्वा नप
 र्थी नमः ॥ आवाहनादिस्त्रानादि ॥ शुक्ललि ॥ जिह्वा उंडी नाऊ प्रदक्षु ॥ उग्रचण्डा विप्रम
 र्दणी ॥ हूं हूं सदानकर ॥ त्वी मर्दि स ॥ मृग्यहननमः ॥ पादुका ॥ ३ ॥ ॐ वलि ॥ जिह्वा
 कीचण्डाचयथेनमः ॥ पादुका ॥ जिह्वा कीचण्डाचयथेनमः ॥ पादुका ॥ जिह्वा कीचण्डाचयथेनमः ॥
 पादुका ॥ जिह्वा कीचण्डाचयथेनमः ॥ पादुका ॥ जिह्वा कीचण्डाचयथेनमः ॥ पादुका ॥ जिह्वा कीचण्डाचयथेनमः ॥
 पादुका ॥ जिह्वा कीचण्डाचयथेनमः ॥ पादुका ॥ जिह्वा कीचण्डाचयथेनमः ॥ पादुका ॥ जिह्वा कीचण्डाचयथेनमः ॥

च पादं जं जं मां श्री वा गंधनी वृद्ध मरुका निका विष्णु पादं ॥ वलि ॥ आनि मूडा ॥
 विन्दू ॥ ॐ ति श्री वा गंधनी पूजा ॥ ॥ अथ अस्मा विष्णु तिक्रम मधु लार्चन माला
 ॥ जं जं किं २ ॥ विष्णु कां कना यद्रु अस्तु यद्रु न्या सी कान यद्रु ॥ कनी गव कु वती ॥
 न्या स ४ ॥ ॥ च का ह्वानी ॥ अस्मि वा अस्मि यद्रु विवृते पनियूती ना गप मा ह्वानी ॥ ह्वो वा अ
 मा गंधनी गल गदल यूरी तत ह्वानी ॥ वार्मु ॥ ह्वानी प ह्वानी चार्मु पि ह्वानी विपिनी सी ह्वानी
 अस्मि यद्रु का व (अस्मि ति माला सकल पनियूती ॥ पथ म अस्मि यद्रु ॥ ॥ आ सनी ॥ जं

[illegible]

१०६

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

षष्ठमं सदा भिव प्रता सनाय पादुका ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ला विपत्तयः सदा सिव प्रता सनाय पादुका ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यवद्वीपवालवीदवीमहर्षिः कृष्णपालः ॥ ॐ श्रीकृतयू (गभी) ठाठिया नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ श्रीकृतयू नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ श्रीकृतयू नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णकानि महाका निरुक्त श्रीकदम्बकृष्ण उदय गिनी पर्वत श्रीवदकनाथ कृष्णपाल
 पिण्ड श्रीकृष्णकानन्ददव पादुका ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

११०

वीथीसूगमिकृष्णपालः ॥ ॐ श्रीकृतयू (गभी) ठाठिया नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ श्रीकृतयू नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दवीथीगालीभनाथदव श्रीकलालाम्बादवीथीकलंगीभनन्ददव श्रीकृष्णकालिमहना
 निरुक्त श्रीकृष्णकानन्ददव पादुका ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 पदुका ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 लयूगभीपूष्प गिनिमहा म कृष्ण ॥ ॐ श्रीकृतयू नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ श्रीकृतयू नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ श्रीकृतयू नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ श्रीकृतयू नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ श्रीकृतयू नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गिनिपर्वतश्रीविमलकृष्णपालनूपश्रीकृष्णिकानन्ददवपापू॥ वायुवका॥ ८॥ ३॥ जे
 दुनन्तदीपधर्मादवीश्रीमहाकालकृष्णपालश्रीश्रीकृतयूगश्रीकामनूपतदायपी
 १० श्रीकामविजयाम्बादवीश्रीकामीभनाथदवश्रीमहाकृष्णाम्बादवीश्रीमर्द
 टिभनन्ददवश्रीकृष्णकामिभरु। काविहृकृष्णिवलहृकृष्णमगिनिपर्वतश्रीवज्रद
 ११ कृष्णपालनूपागीतश्रीकृष्णिकानन्ददवपापू॥ पूर्वको॥ ८॥ ४॥ जे
 दीपधर्मादवीश्रीमहाकालकृष्णपालश्रीश्रीअवतानयूगश्रीपनापनव
 १२ दपी॥

श्रीपाणिनागवृक्षः

श्रीचिन्म्याम्बादवीधीचन्द्रोषनाथदवणीमर्तगीम्बादवीधीमर्तगीम्भनन्ददव
 धीकृकानिमरुकाविहकंथीअमृतवलीमनूबर्वतणीविजयनाथकृणपालसर्वयापि
 सुष्मीम्भरुगानीतणीकूक्किकानन्ददवपापू॥म॥थजिकावयापंपापिमाभृत॥
 ॥०॥तिपी०पंचक॥॥जंअवतानपीठिणीकूक्किकायेपापू॥विशुद्धोपर्वका॥लघु
 म॥थसद्धावस्य॥१॥जंलपिठिवर्चनायेपापू॥नेमथ॥२॥जंशीमहन्डपीठि
 धीमहकाविकायेपापू॥वाथो॥३॥जंकेलापीठिणीकमलायेपापू॥पूर्व

॥४॥ ॐ तिपी विचतुर्ध्व ॥ ॥ जेगधी आदिविमलधी मरै गये पापूग ॥ पूर्व ॥ जेगसर्वरू
 विमलपूलिन्दार्ये पापूग ॥ दक्षिण ॥ जेगधी धागविमलधी स्वनाथे पापूग ॥ उत्तर ॥ जे
 गधी सिद्धिविमलधी चम्पकाथे पापूग ॥ पश्चिम ॥ जेगधी समय विमलधी कृष्णकाथे
 पापूग ॥ मध्य ॥ ॐ ति विमल पीचक नेष्ट्या नाहृत्तूरग ॥ ॥ जेगमालिन्ये पापूग ॥
 जेगमणिवन्धिकाथे पापूग ॥ जेगवल्गारवाथे पापूग ॥ जेगमहारवाथे पापूग ॥ जेगय
 वारवाथे पापूग ॥ जेगआकाशकानगरी मूरवाथे पापूग ॥ जेगमचनार्ये पापूग ॥ जेग

जेगरवचनार्ये पापूग ॥ जेगसूचनार्ये पापूग ॥ जेगनित्रार्ये पापूग ॥ जेगशुभार्ये पापूग ॥ जेगआ
 काशकानगरी मूरवाथे पापूग ॥ ॐ ति मालिन्यादि द्वादशकाशनी पूर्वकाशादि
 दक्षवामदक्षपूजन ॥ ॥ जेगकौंक्री मरुका निकथे झाँगुं कला ॥ से साँसीं सुं मुं वि
 सुद्धिसाकिनीथे प्रहारी प्रनीरवकी भनददव पापूग ॥ जेगधार अधार अधार पा
 नामूरवी बहू न पाये डौलुं मला ॥ ॥ कौंक्री कौंक्री अनारुत काकिनीथे गुण प्र
 नीविभनददव पापूग ॥ जेगझाँझाँ कौंक्री वरुन ॥ ॥ मिश्रकूँ पूँ वधू ॥ ॥ लौली लौली

मणिपूरकला किनीये मरुपूनी सुंठी सानन्ददवपापूग ॥ जैंग सुं वृद्धिकाये कूलदीपा
 येडो सुं पादा (धे नौ नी नू) सुं साधिस्तानना किनीये धीधपूनी ॥ अनूगही सानन्ददव
 पापूग ॥ जैंग न मारुगव ॥ श्री सीतल कमला येडो सुं तुवना ॥ (धे जौं ठी) सुं सुं आधनग
 किनीये नम ४ पूनी म. मित्रानन्ददवपापूग ॥ जैंग किसि २ विष्णुकाक भये सुं ॥ क ४ सुं त
 ला (धे) हाँ हाँ सुं सुं आरु हा किनीये पू ४ पूनी अस्व सुी भनन्ददवपापूग ॥ जैंग यौ यौ
 पूं सुं ललाट्य सुं ॥ कणी पूनी काली भनन्ददवपापूग ॥ ४० तिसा किना दिख दं वाय थ
 येय १

मणिपूरकला ॥ ॥ जैंग मनानुगभये पापूग ॥ जैंग चन्द्रि (धे) पापूग ॥ जैंग विष्णुनाला
 ये पापूग ॥ जैंग पिंगला ये पापूग ॥ जैंग धां धां ये पापूग ॥ जैंग धां धां ये पापूग ॥ जैंग सुकता
 ये पापूग ॥ जैंग निर्महा ये पापूग ॥ जैंग निर्मि काये पापूग ॥ जैंग पां विं कां ये पापूग ॥ जैंग
 निना नचा ये पापूग ॥ जैंग निर्न जन ये पापूग ॥ जैंग सो म्या ये पापूग ॥ जैंग महावला ये पा
 पूग ॥ जैंग ला ला ये पापूग ॥ जैंग हला ये पापूग ॥ जैंग निना म्या ये पापूग ॥ ४० तिमनान
 गदिष्टि भ (धे) यय पूजय ॥ ॥ विष्णुई पूर्वका (धे) तु. नेरु थि तु नना हत ४ ॥ म
 २३५ वीं धये पापूग ॥ जैंग वाध वये पापूग ॥ जैंग लीला ये पापूग ॥ २

१० २ आवाहनस्वापनसन्निधानसन्निधाधनं अवगुं० नमस्तुभ्यं सकलीकलनं सगिपा
 निपुनकं वायथ स्वाधिसूतनं तुङ्गीभक ॥ आधनमग्निका (एतु आरूपापश्चिमउच्य
 नं ॥ ॥ जेङ्गकृष्णिकायेककृष्णकानन्ददेवपादशा ॥ त्रिकायमध्य ॥ जेङ्गमिजायेमि
 जानन्ददेवपादशा ॥ पूर्व ॥ जेङ्गवर्यायेवर्यानन्ददेवपादशा ॥ दक्षिण ॥ जेङ्गवद्युथे
 यद्युथानन्ददेवपादशा ॥ उरुन ॥ जेङ्गडाजयेडाजुनन्ददेवपादशा ॥ पश्चिम ॥ ०० तियुगत्र
 उरुन स्वाधिसूतनं भका (ए ॥ ॥ जेङ्गभूकलीयेपादशा ॥ जेङ्गकलीयेपादशा ॥ जेङ्गति
 वीयेपादशा ॥ जेङ्गमिजायेपादशा ॥ जेङ्गकैकेयेपादशा ॥ पूर्वादिमध्यने ॥ ॥ अ
 गव्यापकतत्त्वस्यासनका मूद्रादर्शनं ॥ रूपकध्वानं पाद्याचमनं अत्यङ्ग उदरुन

निर्मलं मानवित्प्रपुनादि वृत्त्यालं कानन्दनादि भूषणं ॥ ॥ तत्तमस्तु पूजनं ॥
 ग्याधनी ॥ जेङ्गकैकेयेपादशा ॥ जेङ्गभूकलीयेपादशा ॥ जेङ्गकैकेयेपादशा ॥ जेङ्गकृष्णिकाये
 पादशा ॥ ०० तिआग्निवातूधका (ए ॥ ॥ दक्षिणपश्चिमउरुनमध्य ॥ जेङ्गभादिआनन्द
 देवपादशा ॥ जेङ्गअनादिआनन्ददेवपादशा ॥ जेङ्गअरितानन्ददेवपादशा ॥ जेङ्गअव
 तानन्ददेवपादशा ॥ जेङ्गआरूपापश्चिमउरुनमध्य ॥ पूननपिआरूपावत (ए ॥ ॥ दक्षिण
 पश्चिमउरुनमध्य ॥ जेङ्गभूकलीयेपादशा ॥ मध्य ॥ जेङ्गकैकेयेपादशा ॥ जेङ्गकैकेयेपादशा ॥ जेङ्ग
 गद्यानअद्यानअद्यानमूर्खी ॥ पूर्ववकायपादशा ॥ जेङ्गकैकेयेपादशा ॥ दक्षिणवका
 जेङ्गहंसूर्यमण्डलायदाद ॥ ॥ भकलात्मनं पादशा ॥ पूर्वउरुनखाया ॥ जेङ्गसं
 साममण्डलाय वाङ्मकलात्मनं पादशा ॥ दक्षिणमध्यनखाया ॥ जेङ्गनअग्निमं

तायदशकलात्मनं पादशा ॥ उरुनअग्निवातूधका (ए ॥ ॥ दक्षिणपश्चिमउरुनमध्य ॥ जेङ्गभादिआनन्द
 देवपादशा ॥ जेङ्गअनादिआनन्ददेवपादशा ॥ जेङ्गअरितानन्ददेवपादशा ॥ जेङ्गअव
 तानन्ददेवपादशा ॥ जेङ्गआरूपापश्चिमउरुनमध्य ॥ पूननपिआरूपावत (ए ॥ ॥ दक्षिण
 पश्चिमउरुनमध्य ॥ जेङ्गभूकलीयेपादशा ॥ मध्य ॥ जेङ्गकैकेयेपादशा ॥ जेङ्गकैकेयेपादशा ॥ जेङ्ग
 गद्यानअद्यानअद्यानमूर्खी ॥ पूर्ववकायपादशा ॥ जेङ्गकैकेयेपादशा ॥ दक्षिणवका
 जेङ्गहंसूर्यमण्डलायदाद ॥ ॥ भकलात्मनं पादशा ॥ पूर्वउरुनखाया ॥ जेङ्गसं
 साममण्डलाय वाङ्मकलात्मनं पादशा ॥ दक्षिणमध्यनखाया ॥ जेङ्गनअग्निमं

संप्रसाये वेष्टु रोह न सिद्धो सटिकिने नेष्टु शेव कृदिकाये मकरे नवाय पाद ॥ ४१ ॥
 जेगं मुनि थदधन ४ तवर्गन नो गय न्या पून ४ साये वाना हिर दानिकाये कलुनी वा
 न ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
 ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥
 ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

वर्जपाददवीका ८ अ४ काये मराही सगीष्टु मिनी का सिद्ध ४१ नये कृदिकाये अ४
 करे नवाय पाद ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
 ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥
 १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥
 १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥
 १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥
 १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥

ॐ तिनवनाथपूजा ॥ ॥ श्रीगणपतये ॥ जेगसूर्या नन्द देवपास ॥ जेगनीलानन्द देवपास
 ॥ जेगखचनानन्द देवपास ॥ जेगगर्भसूक्तानन्द देवपास ॥ जेगसिंहानन्द देवपास
 ॥ जेगजयानन्द देवपास ॥ जेगविजयानन्द देवपास ॥ जेगमिथानन्द देवपास ॥
 जेगसुधानन्द देवपास ॥ जेगविमलानन्द देवपास ॥ जेगखजानन्द देवपास ॥
 जेगसूडानन्द देवपास ॥ जेगनत्तानन्द देवपास ॥ जेगकणवानन्द देवपास ॥ जे
 गभूमितानन्द देवपास ॥ जेगसोजानन्द देवपास ॥ ॐ शक्रनारायण ॥ पूर्वादि

ये २

श्रीगणनाथ ॥ अङ्कद्वय आचमन पंचमहासूत्रीदर्शय ॥ तदाद्यपूर्वपंक्ति
 श्रीगणदलसंपद्य ॥ जेगभूकला अष्टानन्द देवपास ॥ जेगकलाये मिथानन्द देवपा
 स ॥ जेगकर्णिकाये मथानन्द देवपास ॥ जेगकलाये वीर्यानन्द देवपास ॥ पूर्वच
 उर्दलीपीतपूथनपूथयत् ॥ जेगकलाये उग्रानन्द देवपास ॥ जेगसिद्धाये सिद्धानन्द
 देवपास ॥ जेगलक्ष्माये विमलानन्द देवपास ॥ जेगकलसुन्दर्याये लोकानन्द देवपा
 स ॥ ४ दक्षिणचउर्दलीकपूथन ॥ जेगनकाये उरुमानन्द देवपास ॥ जेगसान्ना

येउरुवानन्ददवपासु॥ जेग विकलाये भूरुयानन्ददवपासु॥ जेग कटिलाननाये भूरु
लानन्ददवपासु॥ ४॥ उरुत्रवगुर्दलीनकपूथन॥ जेग वमये सुदुयानन्ददवपासु॥ जेग
मनाकाये पद्मानन्ददवपासु॥ जेग उन्मनाये लयानन्ददवपासु॥ जेग मारुनाये विज
यानन्ददवपासु॥ ४॥ पश्चिमवगुर्दलपूथन॥ अरु कटदय, आवमन, पश्चिमहा
मूर्त्तिदिर्गय॥ ०० रिखाउणनाथ भिवम किखाउणपशुपूजा॥ ५॥ जेग जेपासु॥ जेग
कीपासु॥ जेग श्रीपासु॥ जेग सुपासु॥ जेग सुपासु॥ ०० रिजेका नादिपूजा॥ ॥ तग

पंचवट् पूजनं २

आधनवगुस्कादपासु॥ आरुना जेग कौकौकौकौक ४ कयपालायपासु॥ २॥ नैमिषा जे
गमंगीगुं गं गमंग ४ पुं श्रीकलगाणवनायपासु॥ २॥ वापूथ॥ जेग श्रीकीकलपूवदूक
नाथयपासु॥ ३॥ ०० गीभन॥ जेग यौसर्वयागिनीय ४ पासु॥ १॥ ०० रिआधनवगुस्काद
पूजा॥ ॥ तताद्यानपूजा॥ जेग लूं ०० दायपासु॥ ॥ दूर्वा॥ १॥ जेग नूआग्नयपासु॥ आरुना॥ २॥
जेग सुंयमायपासु॥ जेग कुं नैम्यायपासु॥ जेग वूंवनमयपासु॥ जेग वूंवायूवपा
सु॥ जेग सुंकुवरायपासु॥ जेग कुं ०० गीभनायपासु॥ जेग अरुद्वायपासु॥ जेग उडुवा

१२३

जै गुरु पापू ॥ बलि ॥ १

अपापू ॥ १०॥ ॐ तिदालाकपालपूजा ॥ ॥ तनादालादिमन्त्रानपूजा ॥ जै गुरु कालाथे
पापू ॥ जै गुरु अमृतपापू ॥ जै गुरु कवधायपापू ॥ जै गुरु नन्दवनायपापू ॥ जै गुरु
पापू ॥ जै गुरु मूर्तिपापू ॥ ॐ तिदालादिमन्त्रानपूजा ॥ ॥ पूनर्म (धृदवदवीपूज
नी ॥ आसनी ॥ ॐ वक्रिप्रतासनायपापू ॥ जै गुरु मासनायपापू ॥ जै गुरु सिंहास
नायपापू ॥ ॐ जै गुरु वासनायपापू ॥ ॥ पूथाकतं धृत्वाध्वनीप ॥ ०७ ॥ जै गुरु नी
लपंचाननाय ॥ मूर्धपर्यङ्कसंस्तिर्त ॥ दिनचर्यवर्षदधिया ॥ नत्तसर्पास्त्रिचर्चिते ॥ वक्रि

१२४

नारिस्त्रिताम्रां ॥ दृतांगस्त्रितेनव ॥ कदा नोलेप्याष्टां ॥ काश्रीकटिमुहास्यवान ॥
विश्वं लवकुशं ॥ दानैचदकवाहू ॥ पालिजार्तजायमाला ॥ पूरुकासिचकीकन ॥ अ
न्यद्वाहूदयायचि ॥ कत्रम्वरुतविश्व ॥ दवाहृतमममनव ॥ सदवसंस्त्रितानव ॥ प्र
संगदष्टयमाना ॥ अथानहकुमाकर्त ॥ ॥ जै गुरु नीलपूजनसम्पन्नो ॥ कवित्रयामहाद
ना ॥ अष्टकुदादभयुजा ॥ सूर्यास्त्रिचर्चिते ॥ मृद्यमालाधनीनोडी ॥ दीप्ताकनालकान
ना ॥ अष्टदम्भकादवी ॥ वर्धनार्धमिभानरु ॥ व्याघ्रचर्मधनिधाना ॥ सिंहचर्मकिनी

१३३

ॐ ह्रीं पापु ॥ ॐ पापु ॥ पुनर्मध्यपूजनं ॥ १
 कौंकौं किं निरविशु पापु ॥ ॐ देवलिगं कुरु स्वाहा ॥ मूलरवौ गणपुजा ॥ ॐ ह्रीं भिव त
 लाविका न अयाये पापु ॥ ॐ अयाय कां कुं पनम धान दू धाना मूखी ली मली ख बी व
 मरद मर पिवर नूनर ननर ॐ कीं कुरु रुद्र विद्या तत्वाये अयाये पापु ॥ ॐ अयाये पापु ॥ ॐ
 रुद्र आत्म तत्वाये पना पनाये पापु ॥ ॐ तिष्ठित त्वन पूजनं ॥ ॥ ॐ ह्रीं न कचन गणी
 पापु ॥ ॐ ह्रीं उ कचन गणी पापु ॥ ॐ ह्रीं कुं पनम म मूखे न मिश्र चन ग पापु ॥ ॐ
 तिष्ठन ग पूजनं ॥ ॥ बलिदानं ॥ यथा पूजा तथ बलि ॥ ॐ ह्रीं आनन्दम किरे नवानन्द

ॐ ह्रीं मूलरवौ विद्याना अथनी
 कुरु स्वाहा ॥

१३४

वीनाधीपतय मूर्ति श्रीमहाविद्याना जगन्नी कमदवदवती स्वावलिगं कुरु स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं
 श्रीमहाविद्या नृ नाजगन्नी कमदवदवती स्वावलिगं कुरु स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं
 मूर्ति पंचपीठ दिअरुसा वि भक्ति कमल छात्र काय मालिन्यादि मना न
 दिअरुसा भिवग (ग) रान वना (थ) र्यः सूर्यादि साउ म अरुलादि स
 रुचक क्लित स्वावलिगं कुरु स्वाहा ॥ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्धै पंचकं चकं चतुर्धै पंच
 कं चतुः ॥ अरु विभक्ति कम (लेव) पूजयर्त्तनमा मुत ॥ ॥ ॐ ह्रीं पद्म मूडा कीं

ॐ ह्रीं मूलरवौ विद्याना अथनी
 कुरु स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं आनन्दम किरे नवानन्द वीनाधीपतय मूर्ति श्रीमहाविद्याना जगन्नी कम

134

15

935

٧

5

10

15

20

कवचविष्णुनामोपायः ॥ १ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ २ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ ३ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ ४ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ ५ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ ६ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ ७ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ ८ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ ९ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ १० ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ ११ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ १२ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ १३ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ १४ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ १५ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ १६ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ १७ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ १८ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ १९ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ २० ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ २१ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ २२ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ २३ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ २४ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ २५ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ २६ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ २७ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ २८ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ २९ ॥
कवचविष्णुनामोपायः ॥ ३० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ पादौष्ठयः ४ पापू ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
कमिभिरभिनमस्वहा ॥ जेन कलितभिरवभिरवायेवय ॥ जेन मायाये लिखन
पसहस्रपनिवर्तिनी नीकवचायक ॥ जेन तानकाकननयुयेयायवय ॥ जेन माल
लि २ अस्त्रायक ॥ जेन यन्त्रायक ॥ ॥ जेन अस्त्रायक ॥ जेन ललाट पाद ॥ जेन कैमा
हृदयनीमुखपाद ॥ जेन वैकोमानीक ॥ ४ पापू ॥ जेन टंवेकुवीदयपाद ॥ जेन
तंवा नाहिना हो पाद ॥ जेन पं २ द्यायणी गु ४ पाद ॥ जेन यं वा म २ य २ न द्यय
पाद ॥ जेन मं महा ल २ य २ द द्यय पाद ॥ ०० तिमा २ काग २ न्या २ ॥ २ ॥ जेन वै सेन २
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ पादौष्ठयः ४ पापू ॥ सर्वकामार्थसाधनी नीहं गु २ रुया ४ पापू
अज्ञनामनी नीहं रु २ य २ पापू ॥ सर्वगप्रतिहता गती नीहं जानु २ द्यय पापू ॥ स्वरूप
पनरूपयन्त्रि २ ३ व २ निहं उर्ध्व ४ पापू ॥ सर्वसत्त्ववर्णा कन २ ल २ दना २ मूलन
म २ २ ललाट पाद ॥ जेन दुर्द क २ निहं क २ पाद ॥ जेन कलितभिरवभिरवायेपा
पू ॥ जेन विद्युक्कि २ निहं जि २ कायी पाद ॥ जेन तानकाकि २ निहं न २ द्यय पाद ॥ जेन पि २ ग
ल २ व २ ॥ ०० ति विख २ न्या २ ॥ ॥ अथ पूजा ॥ जेन आधनाय २
पाद ॥ ८ ॥ जेन प्रता २ सनाये पाद ॥ ॥ आना ॥ जेन विख २ व २ विवकाच दिद्यनूपा महा
दना ॥ लि २ विकनयनेर्यका मदिना नदनदिता ॥ पूर्वत ४ स्वतव २ रु २ हिमकन्द
दू २ से निरा ॥ दकि २ २ व २ नकमूरुनमवच ॥ पसनवदन २ सोम्य ॥ कि २ विद्य
समस्त कर्म प्रवृ २ नीहं निहं क २ द्यय पापू ॥ सर्वमा २ रु २ गु २ रु २ द्यय पनमसिद्धि
२ गु २ पापू ॥ पनकर्मकदनकनी २ कर्म २ सिद्धि २ नीहं सीम २ पापू ॥ मा २ ॥

जैनमधुकाशमाहृष्मिं पादुगा॥ जैनमधुसर्वकामार्थसाधनीनीहुं पादुगा॥ जैनभू
जनामनीनीहुं पादुगा॥ जैनसर्वशोपतिहृत्तजगतीनीहुं पादुगा॥ जैनस्वरूपप्रवरूपपनि
वर्तिनीनीहुं पादुगा॥ जैनसर्वसत्त्ववसीकन॥ कादनामूलनसमस्तकर्मप्रवृत्तीनी
हुं पादुगा॥ जैनसर्वमाहृष्मिं यक्षदय्यपनसिद्धिहुं पादुगा॥ जैनपनकर्मकृदन
कनसकर्मसिद्धिकनीहुं पादुगा॥ जैनमाहृष्मिवचनपुत्रहुं पादुगा॥ ११॥ ॐ॥ त्रि
भुवणपूजा॥ ॥ जैनअधायप्रमाधवनदविमलपीभूवक्षायपीविभुपादुगा॥ न
नुप्र२हुं वाका४पा०॥ विहमय२हुं क॥ ७७॥ ख॥ ७७॥ पा०॥ मायातेलाक्षरूपहुं
क॥ ७७॥ रूपपा०॥ सहस्रपनिवर्तिनीनीहुं नाहोपादु०॥ नृद२हुं नितम्बपादु०॥

३ ५६२ ॥ तिजपापू ॥ त्रिनि २ ६ सीम - मी पा० ॥ हि नि २ ६ गुकतिलक पा ५० ॥
 (१) वासा ॥ (२) वासा ॥ (३) वासा ॥ (४) वासा ॥ (५) वासा ॥ (६) वासा ॥ (७) वासा ॥ (८) वासा ॥ (९) वासा ॥ (१०) वासा ॥

(थैवा॥ माहवनी कोमानी, बछुवी, वानादि, ॐ न्यायनी, जामुं, महालक्ष्मी, चित्यादि
 पूजा॥ ॐ निमाहवनीपूजा॥ ॥ जैनमधुमं, ॐ पाद॥ ॥ जैनडुर्गकणीडुपाद॥

जैगहलितभिरवडु पासगा जैगविद्युक्किक्कु पासगा जैगता नकाक्किक्कु पासगा जैगपि

गलकृद्वं पादग॥ जेगविकृतईष्टुष्टु पादग॥ जेगकृद्वं २३ पादग॥ जेगमसि (ममलि

तसुनासवप्रयङ् पादग॥ जिंरुसरङ् पादग॥ जिंनृयरङ् पादग॥ जिंविअ

मृदु पादग। जेगमाया जे लाघनूप कुं पादग। जेगसहस्रपवित्रिनी कुं पाद

रुनि २३ गृक्ष पापू॥ गसनि २३ गृक्ष पापू॥ गसनि २३ गृक्ष पापू॥ विडा

विनि २ ऊँ दक्षिण सिद्धि चिपा पू॥ क्षातिनि २ ऊँ वाम सिद्धि चिपा पू॥ मानिनि २ ऊँ

दक्षिणोपापू॥ संक्षीवुनी २५ वामा उशुगामनि २५ पापूशु ॥ २ नोपापू॥ हनि २

जाजिगनूदरुं पाएगाजिगनूदरुं पाएगाजिगविनिरुं पाएगाजिगविनिरुं पा

पू० जे० शिनि रहुं पाप० जे० जासनि रहुं पाप० जे० विडावनि रहुं पाप० जे०

ॐ काले निरुद्ध पाप ॥ जेमान निरुद्ध पाप ॥ जेस जीव निरुद्ध पाप ॥ जेह
वि ३३ पाप ॥ जेह वि ३३ पाप ॥ जेह वि ३३ पाप ॥ जेह वि ३३ पाप ॥

[Faint handwritten Devanagari script]

जुंनमामा नृगणाय दुपादशा जिनमामानम ४ पादशा जिं विन्वनम ४ पादशा ॥ ३१ ॥
०० तिमकरवष्टयका ॥ ॥ ने ६ मां पी नीरहस्यमाह पश्यतः पश्यतः पश्यतः

॥ तमकुखलु पूजा ॥ ॥ जे मा धीन्द्रखलु मारुखलु मकुखलु खिरवला
दक्षिणार्द्धाय पाप ॥ अत्रिः के हं वासहं वासी काक ॥ अत्रिः

ॐ दक्षिणार्धायोपायः ॥ गान्त्रिकं २ कुंडलं वामार्धायोपायः ॥ घृति २ कुंडलं
गुल्फपायः ॥ घृति २ कुंडलं वामार्धायोपायः ॥ गुल्फपायः ॥ तस्मात्तद्व्यापकं भवेत् ॥

गुल्फपा०॥ तमा मादुगल्लयकुंदहित

पादे पापू ॥ नमो नमो नमो विष्णु नमः ॥ स्वाहा वाम पाद पापू ॥ ॐ तिपद न्यासः ॥

१४३ रुद्रात्रकाय पादशां जेग मुनी श्रीशिव उद वद वतीया वलि गेट्ट रस्वाहा ॥ वि
स्व उद वतीया वलि गेट्ट रस्वाहा ॥ ॐ तिपद न्यासः ॥ ॐ तिपद न्यासः ॥
ततः ॥ भिरवा स्वकुन्द पूजयेत् ॥ न्यासः ॥ जेग मुनी द्वेदया दिखत ग ६ ॥ जेग भ्रा
भनादि ॥ जेग वृषासनाय पादशां जेग भिरवा ॥ नाथाय पादशां ॥ ध्यान ॥ जेग
पंचवकुद भगुर्ज, त्रिपंचनयनाक्षरं ॥ ॐ तत्र केच भामच, पीतच सुटिका
पमे ॥ इवात्र चन्द्रक ॥ ॐ तारे सर्वतुषणी ॥ ॐ लेशम नूपग्रीव, भक्तिमा
ॐ तिपद न्यासः ॥ उद वद पृथु तितीय प्रकरोति गी ३

१४४ लाचदक्रि ॥ पाभारय वव नद, वीजीरव द्वात्रा मक ॥ महातगा मरुभसनी
सर्व सिद्धि रूल पद ॥ सर्व पाप विनिर्मक, भिरवा स्वकुन्द लेन वै ॥ ध्यान पू
थी नमः ॥ आवा रुना दि ॥ उय भू ॥ जेग मुनी द्वेदया दिखत ग ६ ॥ जेग भ्रा
मूर्क य पादशां ॥ ३ ॥ उद वलि गेट्ट रस्वाहा ॥ ॐ तिपद न्यासः ॥ ॐ तिपद न्यासः ॥
भय ॥ विन्दु यद द ॥ ॐ तिपद न्यासः ॥ ॐ तिपद न्यासः ॥ ॐ तिपद न्यासः ॥
चन ॥ ॥ ततः ॥ भिरवा स्वकुन्द पूजयेत् ॥ न्यासः ॥ जेग भ्राभनादि ॥ जेग वृषासनाय पादशां जेग भिरवा ॥ नाथाय पादशां ॥ ध्यान ॥ जेग

मययनमः॥ गिनस ॥ जे उका कन्यसनमः॥ मू३॥ जे कृत्तिका दवतायेनमः॥ न
 गल ॥ जे उं वीजायनमः॥ गुहस ॥ जे मकयनमः॥ पाठनपा ॥ जे रुकीलका
 यनमः॥ सकरुनेरावयाय ॥ जे राग ॥ माका ॥ र्थरूप विनियोग ॥ न ॥ मस्कान
 याय ॥ ॐ ति मृषि कन्ययास ॥ ॥ पूनर्थास ॥ जे नूद नू पक नू दू यमरा पाशुप
 ता म्हाय रुद्र ॥ जे अधानकां सर्वात्मन अंगुसायनमः॥ पादः॥ जे थधा नकी व
 न्ना ॥ एतर्क नीत्यानमः॥ पादः॥ जे धान धान न नू दू ॥ लनी मध्य मात्यानमः॥ पा

दः॥ जे सर्वतः सर्व सर्वं पिंगल अनामिकायीनमः॥ पादः॥ जे उं सः॥ कां
 आति नूपाय कनिष्ठायां नमः॥ पादः॥ जे नमः॥ नूद नू पक ॥ मरा पाशुपता
 म्हाय रुद्र पादः॥ ॐ ति कन्यास ॥ ॥ अथ दन्यास ॥ जे अधानकां सर्वा
 त्मन रुद्रयायनमः॥ पादः॥ जे थधा नकी व न्ना न गिनस स्वाहा ॥ जे धान
 धान न नू दू ॥ काल नी गिरवाये वोषट् पादः॥ जे सर्वतः सर्व सर्वं पि
 ङ्गल कवचाय दू पादः॥ जे उं सः॥ कां आति नूपाय न नू दू याय वोषट् ॥ जे

नूदनपदकदूर्यश्चमहापाशुपताम्नाय रुद्रपाद ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
ललाटपाद ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
उपादयपाद ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

नद्याश्च चन्द्रवृत्तं सकलकलदकं वापुलसं तुवाक्ष ॥ चार्धदं तानदीं वेणि
स्त्रिवृत्तविपिनं युक्काव (न्यमालं, सापान्मलचक्रं जलभिवृत्तयतीं का
लमालानमहे ॥ जेजमूलवुद्धं ध्यानयोगवतिमिहसंश्रुमं (गतिविश्रा, चन्द्रा
र्ककद्विंकायीवसूदलविजयां सामसूर्याग्निवृत्तं ॥ कृपादीनिवासस्त्रितिस
पिगगर्गद्वानपदानकानी, कालादीत्सर्वचक्रप्रदावयूतयुक्तं सर्व (अथादिमाध्य
॥ गूतिचक्राद्वानी ॥ ॥ आसनी ॥ जेजआधनाभकयपादग ॥ जेजअनकासनायपा

रूपा जेण कन्याय पादग ॥ जेण अकनाय पादग ॥ जेण पद्माय पादग ॥ जेण पद्माय पा
 दग ॥ जेण कमलाय पादग ॥ जेण कर्णिकाय पादग ॥ जेण चन्द्रमण्डलाय पादग ॥ जेण चन्द्र
 मण्डलाधीपतय बुद्ध प्रतापनाय पादग ॥ जेण सूर्यमण्डलाय पादग ॥ जेण कीर्ति
 र्थमण्डलाय धिपतय विष्णु प्रतापनाय पादग ॥ जेण अग्निमण्डलाय पादग ॥ जेण धी
 अग्निमण्डला धिपतय नृप प्रतापनाय पादग ॥ जेण भक्तिमण्डलाय पादग ॥ जेण कुं
 भकिमण्डला धिपतय श्री गुरु प्रतापनाय पादग ॥ जेण ममण्डलाय पादग ॥ जे

॥ श्री गुरु मण्डला धिपतय सदा भिष प्रतापनाय पादग ॥ जेण वृषा सनाय पादग ॥
 जेण सिंह सनाय पादग ॥ जेण बलि प्रतापनाय पादग ॥ ॐ नमः ॥ ॥ पूजा कर्तव्य
 स्वाध्यायन पठन ॥ जेण वृषा रसै स्तुति दत्त स्ववर्ण रूप ॥ भक्ति ॥ एकवर्क विमल गुण
 अष्टादश गुण भक्ति ॥ उमरूप नरुं स्वर्ण ॥ मनमदुर्गम वडक ॥ गरिष्ठ वेदुवा यीव
 वनद वनद कि ॥ वाम स्वर्ण गभूली ॥ हलके नूपा भकी ॥ घीष्ठा कपाल वेदु ॥
 अर्यै रयना भकी ॥ पट्टन वडता जा नू ॥ वी भा नू स्कार दवती ॥ एकवर्क विमल गुण

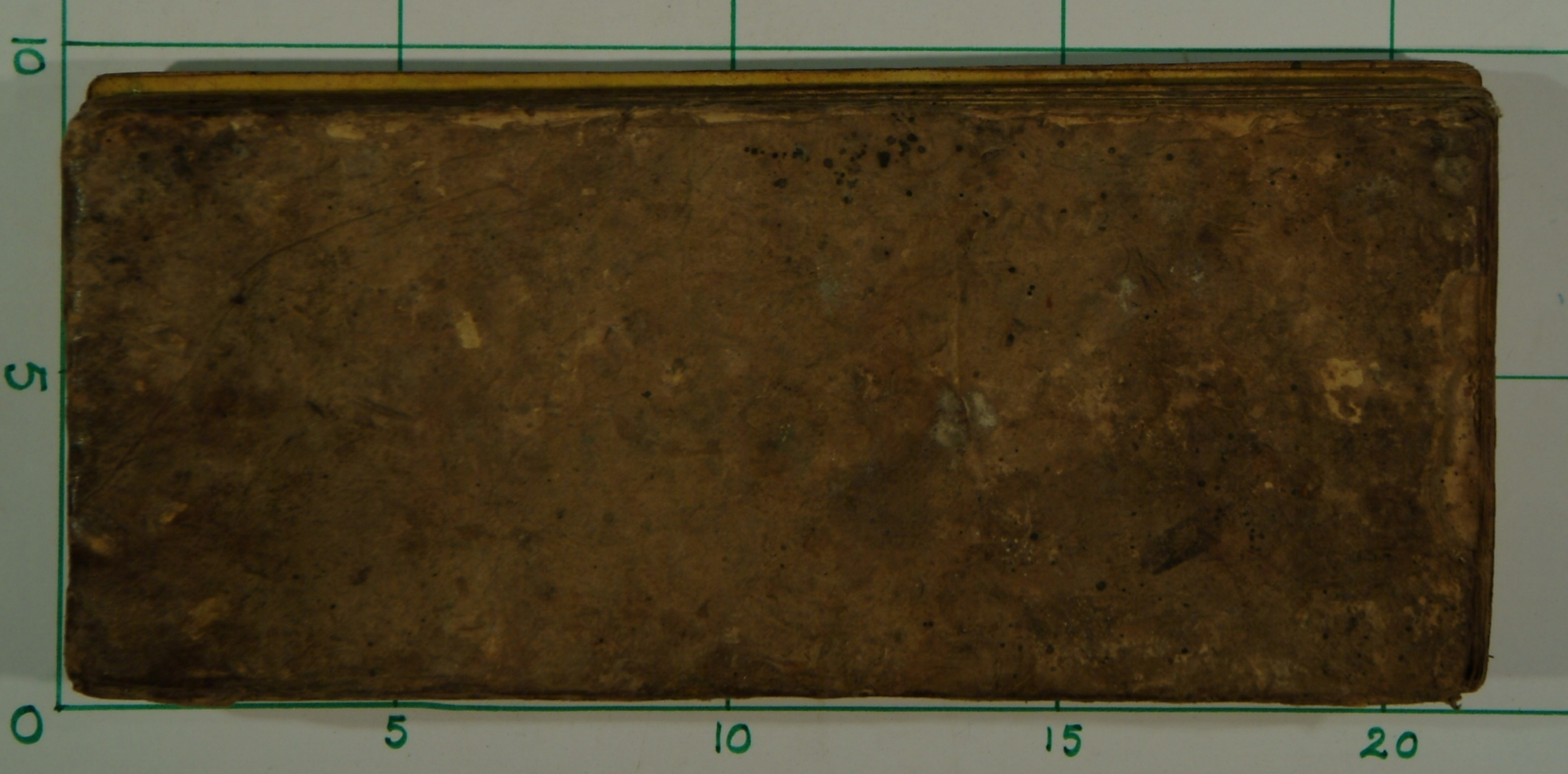
अशुलिपूषीपाप॥ ॐ देवलिपूषीपाप॥ ॐ अथानकांथधानकीधान
 धानकनककुं सर्वत४ सर्वसर्वकुं सर्वकुं नद्वपकु ४ पाप॥ वलि॥ ॐ
 ॐ वक्रकृष्णीकुं जेलाकाकषणीकी कामोगडावणीकी मीमहाकारका
 निजिजिसोपापा ॥ वलि॥ ॐ नमार्गवतीकुं कृष्णिकायेडांकी कोधान
 अथानअथानामरवीकांकी किलिरविषपाप॥ वलि॥ ॐ नमार्गवतीकुं कृष्ण
 कृष्णिकायेडांकी मूढ अथानमथानअथानअथानामरवीकांकी किलिर वि

अथपाप॥ वलि॥ ॐ नमार्गवतीसिद्धकुं कुं कुं कृष्णिकायेडांकी मूढ अथान
 अथानअथानअथानामरवीकांकी किलिरविषपाप॥ वलि॥ ॐ
 तत४ भिनस्कान॥ ॐ हंभिरास्कानपाप॥ ॐ सभिनस्कानपाप॥ ॐ क
 ललाटपाप॥ ॐ मंवेकायपाप॥ ॐ लंददयायपाप॥ ॐ वंनारो
 पाप॥ ॐ नंयुपाप॥ ॐ यंनोपाप॥ ॐ दुंपाददयपाप॥
 ॥ पुननवात्मावर्तनपाप॥ ॐ हंभिरास्कानपाप॥ ॐ सभिनस्कानपा

प म वि लि ग पा नि मु दी र्थ य न २

१७
ताय पाद ॥ जे १ उँ उँ च सु रे न वा य. चं को मा नी भ कि स हि ता य पा द ॥ जे १ मं मुं का
ट रे न वा य. टं वे पु वी भ कि स हि ता य पा द ॥ जे १ ० ० उ म रु रे न वा य तं वा ना हि
भ कि स हि ता य पा द ॥ जे १ जे १ क पाल रे न वा य यं ० ० द्या य बी भ कि स हि ता य
पा द ॥ जे १ उँ उँ री य द रे न वा य यं च मू ० ० भ कि स हि ता य पा द ॥ जे १ अँ अ
० रे न रे न वा य भं म ह ल बी भ कि स हि ता य पा द ॥ च वे व लि ॥ ० ० य द प उ व
ज ने ॥ ॥ न ता स्तु व रु पू ज ने ॥ जे १ स स स्वा य पा द ॥ जे १ न न ग स पा द ॥ जे १ तं

१८
त म स पा द ॥ ० ० नि ति व रु कि पू ज ने ॥ ॥ न ता वा द्य च रु द्धा ण पा द ॥ जे १ क्रां क य
पा ला य पा द ॥ जे १ ग मं ग ण प त य पा द ॥ जे १ यों या गि नी त्या पा द ॥ जे १ वां व द्का
य पा द ॥ च वे व लि ॥ ० ० नि च रु द्धा ण पा द ॥ ॥ न ता ० पू र्वा दि द्वा न रु क ला क य
ला र्ज ने ॥ जे १ लं ० ० द्या य पा द ॥ जे १ नूँ आ ग य पा द ॥ जे १ मूँ य मा य पा द ॥ जे
१ कूँ ने म त्या य पा द ॥ जे १ वूँ व नूँ म य पा द ॥ जे १ यूँ वा य व पा द ॥ जे १ सूँ क व
ना य पा द ॥ जे १ कूँ ० ० री म ना य पा द ॥ जे १ यूँ अ म य पा द ॥ जे १ उँ उँ वी य पा



५५६ रग॥ॐ देवलि॥ॐ शिलाकपाल रग॥ ॥ जेऊ कालाये पाद॥ जेऊ कौ अम्बव पाद
॥ जेऊ पीकव धाय पाद॥ जेऊ सुनदवनाय पाद॥ जेऊ कौ पाद॥ॐ ति
कालादिम धार्क पूजा॥ ॥ जेऊ जे पाद॥ जेऊ कौ पाद॥ जेऊ अ पाद॥ जेऊ सु
पाद॥ जेऊ कौ पाद॥ॐ ति पूजा॥ ॥ जेऊ क विद्या गिनी नीर ० जा क गुया या
गया मनु जा गवु जा कूल जा सिंदा रग ४ थ क विद्या गिनी नीर वनी एम वनी उका कनी
द्य कनी शक नीर पुष्प ३ सट् सफा नवा कनी र्म सिंग क सिनी नीय थप पनानी

वलिगुट्ट २ मम सिद्धि कर्तुं नुदं रुद्र स्वाहा ॥ जै ग जयादि ग एथा वलिगुट्ट २ स्वा
 हा ॥ जै ग जया आनन्दम कि श्रेनवानन्दवीनाधिपतय मां मूलस्नानरुद्रानकाय
 ॐ देव नैव शुभं वलिगुट्ट २ स्वाहा ॥ जै ग जया आ नन्दम कि श्रेनवानन्दवी
 नाधिपत यय मां मूलस्नानरुद्रानकाय ॐ देव वलिगुट्ट २ स्वाहा ॥
 जै ग जया मां मूलस्नानकृष्णीकम्ब र्नीवलिगुट्ट २ स्वाहा ॥ आवाहना
 दि मूलस्नान महा मूडा लिङ्ग मूडी दर्शनय ॥ जै ग जया मां मूलस्नानस्ति

तस्या वलिगुट्ट २ स्वाहा ॥ विन्दु ॥ अङ्ग गन्ध पूष्य धूप दीपने वा शरु लता मूल य
 स्नापनीतादि मूलस्नानार्चन विधित्सर्व विधिपलिपूर्व मन्त्र ॥ ॥ ॐ तिथी ३
 पश्चिम जलान्न जलान्न आय मूलस्नान पूजा विधि ॥ ॥ ततः ४ अङ्गनाय पूजा ॥ ॥
 आदी पूर्व दिशि ॥ ॥ न्यास ॥ जै ग जया धनादि ॥ जै ग स्वतपद्मासनाय पाद ॥
 जै ग प्रतासनाय पाद ॥ ध्यान ॥ जै ग पूरुष स्वतपद्मासनखवदनी स्वतवर्ण
 विनय दक्रगाय सधौ भजन नृ सिमर्य वामरुद्रिभूल ॥ पाणिचापसूतका

नमः स्वाहा अम्नाय रुद्र ॥ ॥ आसना ॥ जै ग आधनादि ॥ जै ग महापद्मासनाय पाप
श ॥ जै ग उनेरुलेन वासनाय पाप ॥ जै ग निवा सनाय पाप ॥ ध्यान ॥ जै ग नन्दकाष्ठाक
उष्टो गिरासेवदनी हृष्टिका दक्षपीता वावेधन नारावसूदन विधता मूढुमाला
पिनगी ॥ दक्षिण लवङ्गं हृष्टिघन विदितं मूढुखद्वाग वामे वालपुतकदालं धन
तिष्ठतु कनी ॥ कालिका चिन्तामि ॥ ध्यानपूर्वकं नमः ॥ आवाहनादि ॥ शृङ्गलि ॥ जै
गङ्गास्त्री ॥ मू ॥ मू ॥ कांकीं कूंकं कांकीं पीयूषं वर्धनं नमः पाप ॥ ३ ॥ वलि ॥ जै ग

ॐ ह्रीं सिद्धि कला ली की क्रीं ह्रीं नमः स्वाहा पादुका ॥ ३ ॥ ॐ देवलिङ्ग २ स्वाहा
 ॥ महामूर्धादयः ॥ विन्दुययदया ॥ ॐ तिष्ठन्नायकालिपूजा ॥ ॥ नमः ॥ सि
 द्धि लक्ष्मी पूजा ॥ न्यासः ॥ ॐ नमः भूम्नाये रुद्र ॥ ॐ ह्रीं कीर्ति उवाच नमः ॥ ॐ ह्रीं
 कां भिनस स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं भिरवाये वयः ॥ ॐ ह्रीं केवचाय ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं भिनययाय वी
 र्य ॥ ॐ नमः भूम्नाये रुद्र ॥ कन्या सनो गन्यासः ॥ ॥ आसने ॥ ॐ आधनादि ॥
 ॐ पेद्मासनाय पादुका ॥ ॐ सूर्यमधुलाय पादुका ॥ ॐ साममधुलाय पादुका ॥ ॐ

वक्रिमधुलाये पादुका ॥ ॐ संसत्वाय पादुका ॥ ॐ नैनसपादुका ॥ ॐ तंतमसपादु
 का ॥ ॐ सिंहासनाये पादुका ॥ ॐ महान्द्रासनाये पादुका ॥ ध्यान ॥ ॐ पद्मपता विनू
 यस्तुटिकमलिनिरापवका विनया उलाक माहयकी तुगदणकयता दिव्यव
 रुद्र तागी ॥ वामकापालभूलाय नवलदमहापादुका मूर्धुवहनी द्युष्ठाखदोगख
 प्रारयष्टा गिसहिता धायत सिद्धि लक्ष्मी ॥ ॐ ध्यान पूजा ॥ अक्षरलि ॥ ॐ ह्रीं कीर्ति
 ह्रीं ह्रीं कीर्ति नमः ॥ ॐ सिद्धि लक्ष्मी दय नमः पादुका ॥ ३ ॥ वलिङ्ग २ स्वाहा ॥ ॐ

सुं पीमराविद्यानां शब्दनीकुं पीसिद्धिलक्ष्मीदवोपास॥३॥ वलिगृह्ण स्वाहा॥
 जे० पिमिरासुडीदर्थि ॥७॥ विन्दुयदद॥ ०० गिउरुनाम्राय सिद्धिलक्ष्मी
 पूजा॥ ॥ ततः ४ लिपून सुदनीपूजा॥ ॥ न्यास॥ जे० अम्नाय रुद्र॥ जे०
 अ० अगुष्टाय नमः॥ जे० क्लीं निरसे स्वाहा॥ जे० सौं मिखाय वोचद॥ जे० हों कवचाय दू
 ॥ जे० क्लीं नयुयाय वसद॥ जे० अम्नाय रुद्र॥ ॥०॥ चक्राखाना॥ जे० विन्दुयिका वसु
 का वदभलयुग्मी मन्त्रनागदन्तसंयुगसादनाली॥ वृत्तत्रियचधनली मन्त्रन

यंच श्रीचक्रनागसहितं पनदवताया ॥४॥ × ॥ आसना॥ जे० आधनादि॥ जे० पञ्च
 तासनाय पाद॥ जे० नकपद्मासनाय पाद॥ ॥ ध्यान॥ जे० गवाकसमसंकाशी सिद्ध
 नाना (अ) रितं नकाधुसंस्मितीदवी सर्वा रनयत सिधी॥ पाठार्क मठानधुमप
 पंचवाद्यधनूर्धना॥ चक्रम (अ) गतादेवी ध्यायति पून सुन्दरी॥ जे० ध्यानपूर्व पा
 द॥ आवाहनादि॥ श्री अलि॥ जे० जे० क्लीं सौं कुं अग्निचक्रकामरूप रूपी ॥ क्लीं
 गवती देवी षण्मा धामिक कृष्णी नित्या पुं कामध्वनी नृदात्मन कि सर्वस

۵۲

स्ववर्णीकनगीमहालिपूनसूचनीजेंविद्युक्तीकामध्वनीदयोपासण॥३॥बलि॥
जेंजेंकींसांझींसूर्यचक्रजालान्धनपी॥०॥कींकींभयछीगनाथसिककींविष्णु
त्मकिपनाहुयेपासण॥जेंजेंकींसांझींसांमचक्रपूर्वगिनिगद्धनेजेअठिठा
नाथसिककींजीरुगमालिनीदवी॥परिवृत्तात्मकिपनाम्हाप्रण॥जेंकीं
सांझींझींसींवृक्षचक्रउठिया नपी॥०॥महालिपूनसूचनीदवीपासण॥जर्वबलि
५५५ ५५५ ५५५ २स्वाहा॥सर्वाकर्षणीमूर्तीदर्शयत॥विन्दुयैदद॥०॥तिथि

۵۳

पूजसुन्दरीपूजा॥ ॥ततः४पनायासादपूजा॥न्यास४॥जेंगआधनादि४॥जेंगन
कपमासनायपाद४॥ध्यान॥जेंगपंचवकुचकुर्वाङ्गु,सर्वाङ्गुनरादुचित॥चन्द्रसू
र्यादिनयन,शिवशङ्खात्मकैरङ्ग॥पानपाशैरङ्गानमदा,यूक्तेनैरिङ्गलैकने४॥
विद्यातसिद्धिविद्यात,सर्वानन्दमूखापम४॥ध्यानपूर्यनम४॥शङ्करलि॥जें
गजेंक्रींशीजेंक्रींसोसोसोपनायासादविद्यापाद४॥३॥अर्ववर्तिगृह्णस्वा
हा॥यानिमूढादहयि०॥विन्दुजयदद०॥४॥तिडुर्वाम्नायविपूजसुन्दरीपना

प्रासादपूजा ॥ ॥ तताहातकवनीपूजा ॥ न्यास ॥ जेऊं अस्त्राय रुद्र ॥ जेऊं जेऊं
 छायनमः ॥ जेऊं दीर्घाक्षनीर्या नमः ॥ जेऊं खुं मेधमायानमः ॥ जेऊं कीर्तिना
 मिकायानमः ॥ जेऊं ० सो कनिष्ठायानमः ॥ ॥ जेऊं अस्त्राय रुद्र ॥ जेऊं क
 न्यासनाङ्गन्यासः ॥ ॥ असन ॥ जेऊं आधनादि ॥ जेऊं प्रतासनाये पोषण ॥
 ध्यान ॥ जेऊं ध्यामायी हाट कणीन सवदनधनीसूक कणीचनग्रा वसिन्धू ॥ २
 नवर्षणीर्षतुजगगनयूतालीठपादाकुरुता ॥ पञ्चाग्निवदचातुर्य

७५

गकगणि विदिष्टमिर्याभिरवाच गयस्कावद्यमत्स्यदधगिष्ठरुवना
 द्दुर्निकर्त्तिपाय ॥ दक्षवामचसूर्यकमथगजगसादुर्ननीलकण्ठपा
 जसत्पीयतवेत्तमृगमधूनसंयाचदवीविनयी ॥ सर्वालीकालदेसीपनम
 णिवकनीसर्वकामप्रदाता वीक्ष्यानीमाष्टनूपाकिनकूलनमितागीसदा
 ध्याययामि ॥ ध्यानपूषीनमः ॥ ॥ आवाहनादि ॥ ॥ अहलि ॥ जेऊं कीर्ति
 दुर्गणीहातकवनीनिवणकिसहितायनमः ॥ पादग ॥ ३ ॥ जववलिङ्ग रुद्रस्वा

हा ॥ जे गुरुं दं अक्ष विपतय श्रीवडा वानाह महारुने वाय श्रीवडा या गिनी महारु
 नवी दशोपास ॥ वलि ॥ जे ग या ग कान मूडी दर्शय ॥ विन्दु गयी दद ॥ ॐ सि
 अक्षनाय हाटक वनी पूजा ॥ ॥ ॐ शिखण म्नाय पूजा वि वि स मा फी ॥ ॥ ॥
 ततः सात गुरु नव पूजा ॥ ॥ न्यास ॥ जे ग आ वा ना दि ॥ जे ग अन का स नाय पा
 द ॥ जे ग प्र ता व नाय पा द ॥ ध्यान ॥ जे ग प्र ता स न स न र्क नू धि न स म क ने मू
 ल माला र्क कर्ण मारु गुरु न वार वी प्र ता य न स न य नै दे वि का र्क क नाली ॥ नो
 व ग र्ज द्य ॥ स म ध्य र्क - अ स्य र्क ग व न व प नी ॥ इति ति र्वा णि र्क सा स्या न्न न

र्क सर्व दा व ॥ १ ॥ शिव वायु ह न डी च ॥ ॐ न्द्र वि न्द्र ग गा व ह ॥ महारु
 मिथी ॥ अ किय की व न म र य क ने न क का ग क र्क ॥ ध्यान पू र्ण न म ॥ श्री ॥ लि ॥ जे ग
 म्नाय श्री मारु गुरु न व वाय पा द ॥ जे ग म्नाय प्र का ण अ कि स हि ता य पा द ॥ ३ ॥ न वी व
 लिंग र्क २ स्वा हा ॥ शिख ल यानि ॥ मूडी दर्शय ॥ विन्दु गयी दद ॥ ॐ सि
 मारु गुरु न व पूजा ॥ ॥ ततः ॥ निर्विघ्न पूजा ॥ न्यास ॥ जे ग हौं अम्ना
 य र्क ॥ जे ग हौं अगु ष्ठा य न म ॥ जे ग सौं त र्क नी र्थी न म ॥ पा द ॥ जे ग कौं म ध्य मा
 र्थी न म ॥ पा द ॥ जे ग कौं अना मि का र्थी न म ॥ पा द ॥ जे ग सौं क मि ष्ठा र्थी न म
 लि प ना वि द्या नि र्वा णि द व दु र्ध र्क ॥ अ न र्थ च अ वा र्थ च - स र्थ स र्थ मह

[illegible][illegible]

नमो पादश ॥ नमो कृपापादश ॥ नमो श्रीमो पादश ॥ ॐ तिपनमाकनमकु ॥ सं
 नमो श्रीमहा निर्वो लोचननायनन्दनाथ ॥ के यस्मिन् श्रीनिर्वो लोचनीय कि
 नमो सदिताय पादश ॥ ॐ तिपनमनिर्वो लमकु ॥ ॐ नमो श्रीमो नमो नमो
 नमो श्रीमहा निर्वो लोचननायनन्दनाथ ॥ ॐ तिपनमनिर्वो लमकु ॥ कि सदि ताय सि
 वाकसर्वधिकानाह व नमो नमो पादश ॥ ॐ तिसर्वधिकान ॥ ॐ निनम
 नायविद्वह निनाकानाय श्रीमहा तनसूक्ष्मप्रवादया ॥ ॐ तिगमय ॥ ॥

नमो श्रीमहा निर्वो लोचननायनन्दनाथ ॥ ॐ तिपनमनिर्वो लमकु ॥ ॐ नमो श्रीमो नमो नमो

वायममव ॥ ॥ ॐ नमो नमो लोचनमनमनाह ॥ ॐ नमो लोचनमन
 नमो पनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥
 नमो यपादश ॥ पापल ॥ ॐ नमो पनमपापनो ॥ ॐ नमो पनमपापनो ॥
 वलिगद ॥ ॐ तिपनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥
 नमो पनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥
 नमो पनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥ ॐ तिपनमाह ॥

पाद ॥ **ॐ** नमो **ॐ** जे १ वंद काटि प्रगत ॥ वंदार्द्धकृत ॥ १४ ॥ **ॐ** का स्थालाचनगी
 दि विष्णु ह्यो हान दामधा ॥ उत्तमं गं साम हल द्वा ॥ १५ ॥ **ॐ** तं गं मलाचन ग्या ॥ मृ
 त्युं ॥ १६ ॥ समालाचन वनदा रय ठ विवध ॥ १७ ॥ **ॐ** कल ॥ १८ ॥ **ॐ** न्दु सै धृ थो ॥ १९ ॥
 ॥ २० ॥ किं धृ स ॥ २१ ॥ नाना रन ॥ सारा यी ॥ हान कय न म विहा ॥ २२ ॥ **ॐ** च
 त्माच सै प ॥ सै स्किता प न म ॥ **ॐ** न पृथी न म ॥ २३ ॥ **ॐ** आवाहनादि ॥
ॐ रति ॥ २४ ॥ **ॐ** अधा न्दो थ धान की धान धान न न्दुं ॥ सर्वत सर्व सर्व ॥

॥ २५ ॥ **ॐ** स ॥ २६ ॥ **ॐ** न्दु न य ॥ २७ ॥ **ॐ** सै पृथु कल ॥ २८ ॥ **ॐ** मय पाद ॥ २९ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ३० ॥ **ॐ** स मृत्यु ॥ ३१ ॥
 य अमृती ॥ ३२ ॥ **ॐ** म का रे न वाय सदा गि वाय महा ल ॥ ३३ ॥ **ॐ** किं स हिता य पाद
 ॥ ३४ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ३५ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ३६ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ३७ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ३८ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ३९ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ४२ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ४३ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ४४ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ४५ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ४६ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ४९ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ५० ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ५१ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ५२ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ५३ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ५४ ॥
 ॥ ५५ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ५६ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ५७ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ५८ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ५९ ॥ **ॐ** न्दुं ॥ ६० ॥

विष्णु न द्वा स न्दुं ॥ विष्णु न द्वा स न्दुं ॥ विष्णु न द्वा स न्दुं ॥

158

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

१८५
 आकराप्रतिष्ठापपाद॥ जे॥ न्या॥ श्रीसंपूर्णकलभयपाद॥ जे॥ पूजत
 वल्लिगुरुस्वाहा॥ धनू मूढाया निमूडा विमूल मूडा दर्शयतु ॥ कमल
 विन्दुतयददतु ॥ ॐ तिकलभय
 जे॥ वांछदया दिखतु न्यासः ॥ जे॥ भावनादि ॥ जे॥ वैकाला सनाये पाद॥
 ॐ नै ॥ जे॥ लाकार सनिरादवी पद्मनाग समप्रण ॥ सर्वत्र विविर्गंगी युक्ति
 काहृत विग्रहा ॥ अस्त्रादभयुगा दिव्या नानाप्रह्वनमाद्यतः ॥ नाना नसधनीद

वी जेलाकुनान्यविद्यत ॥ रवकुपाभाकूभासद्य कपालकूलिध्वज ॥ नथनीग
 वथाघट्टनवमनुवनपद ॥ रुटकेधनूपाभा ॥ रवबाईसकमधुली ॥ ४
 लमूफनवे ॥ गधार्तिचारुनेकन ॥ मधुलीवधुयित्वागु नदीतुगवि
 सधिया ॥ गुसकीपातकान सर्वा न चामृत मृतकाहवा ॥ ५ ॥ नपूष्य
 पाप ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

कूटकुं मलकोमात्रीकाविश्वशीवानूगीकूलकूमायेपाप ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

कृष्णाय पाद॥ नैऋतौ सर्वमंगलदायने कूलकृष्णाय पाद॥ नैऋतौ अग्निमसि
 द्विकूलकृष्णाय पाद॥ नैऋतौ लघिमसि द्विकूलकृष्णाय पाद॥ नैऋतौ मरि
 मासि द्विकूलकृष्णाय पाद॥ नैऋतौ फिसि द्विकूलकृष्णाय पाद॥ नैऋतौ पा
 काम्यसि द्विकूलकृष्णाय पाद॥ नैऋतौ सितकूलकृष्णाय पाद॥ नैऋतौ वभि
 त्सि द्विकूलकृष्णाय पाद॥ नैऋतौ सर्वकामावभित्सकूलकृष्णाय पाद॥ नै
 भूवृक्षाय (ए) अग्नितीगरे नवाय पाद॥ नैऋतौ कं माह वृक्षे नृनरे नवाय

पाद॥ नैऋतौ वंको माय्ये चतुशे नवाय पाद॥ नैऋतौ वैष्णवे कारे नवाय पाद
 ॥ नैऋतौ गैवानाक्षे उन्मरुते नवाय पाद॥ नैऋतौ पेंड्याय (ए) कपाले नवाय पा
 द॥ नैऋतौ यंचामुभये लोचने नवाय पाद॥ नैऋतौ महालक्ष्मि संहाते नवा
 य पाद॥ एवं वलि॥ अधो नवजवत्सीमा॥ नैऋतौ श्रीकूलकृष्णाय पा
 द॥ दं वलि॥ नैऋतौ निमज्जदं भयं ॥ विन्दु ॥ यंददं ॥ इति
 कुरुपूजाविधिः ॥ ॥ ततो अथ कुरुपूजा ॥ नैऋतौ अथ कुरु

१८८

[illegible]

95

यादि ॥ आसन ॥ ॐ अन्नाधानादि ॥ ॐ अमयूनासनपापू ॥ अवाहनादिध्यानं ॥
 ॐ अवन्धूकानूषसंकाश ॥ गदित्काटिसमप्रण ॥ सूर्यविम्बनितादवी ॥ वृषट्
 प्रहसितानना ॥ वालनूपीमहामाया ॥ कामात्रीयमनूपिणी ॥ शकाचउशुजा
 काश ॥ पूर्वार्धलिभक्तिस्तुतं ॥ पद्मनागमलिमौलि ॥ मूकालंकातहृदिना ॥ नि
 रिवनाऊसमानूठा ॥ विष्णुनं ॥ भक्तिकानिदी ॥ सोलाग्यसंपदाल ॥ श्री ॥ मायू
 पूषयभक्षियं ॥ सर्वकामेश्वरीदवी ॥ सर्वव्यापिमहेश्वरी ॥ आगच्छतुक्ति

तावक जेला कसुष्टिका निगी ॥ आत्मा दवी सदा नोमि कोमारीं अहम मङ्गला ॥
 ध्यान पूर्ण पाप ॥ ॥ अलि ॥ जेऊं चें केंऊं में ऊं कौं मों दौं श्री महा कोमा
 तिका विअ पाप ॥ ३ ॥ जेऊं कौं श्री कर्करी कृष्ण कसेला क ॥ अपी अधिप गय
 सह कूमात्री विग्रह ॥ आकंद दस्व मस्वाहा ॥ जेऊं म ॥ म्मी पाप ॥
 मधान वज्र वामी ॥ वलि ॥ जेऊं कौं दयादिष ॥ उरु न ॥ पूजनं उ
 ॥ वलि ॥ भक्ति म्मांड र्भय ॥ वलि ॥ जेऊं में व ॥ काष्ठा ॥ यदित पूज

नंद ॥ वलि ॥ जेऊं में म्मांड व अये पाप ॥ जेऊं ऊं णी प्रच अये ॥ जेऊं उं उं च ॥
 अयाये ॥ जेऊं में म्मांड व अनाये ॥ जेऊं ऊं णी प्रच अये ॥ जेऊं उं उं च ॥
 ऊं ऊं च अनाये ॥ जेऊं में म्मांड अति च अिकाये ॥ वलि ॥ जेऊं कयादि पूजा
 ॥ वलि ॥ विन्दू ॥ अति कोमारी पूजा ॥ ॥ कृष्णिलिसा ॥ वदूक महा काल
 नन्दि पूजा ॥ ॥ कांठिलिसा ॥ गधपति कृष्णाल महा काल पूजा ॥ ॥ मा
 लहासनदमनपविशनाहन ॥ ॥ अग्रस कृष्ण सिद्धि चाम्पू ॥ ॥ दवीरू ॥

स्तनकपावलि ॥ आवाहनादियानिमृडांदर्भयत् ॥ भूषदीपा ॥ जापो ॥
 ॐ ॥ २७ ॥ स्तन ॥ हंसी पूर्वाधिकारी ॥ नकासिंदूनेवर्ध ॥ वस्त्राधीकमलेंद्र
 ॥ ३ ॥ मृगप्रदुग्धमनाथं ॥ मृगगन्धादि ॥ नृगिकोमानी पूजा ॥ ॥ अथ दूध
 लावि ॥ मधुनवलसपूजा ॥ ॥ गनः श्रीथंथं पूजा ॥ न्यासः ॥ नमः ॥
 म्नायरुद्र ॥ ॐ क्रीं मृदुष्टायां नमः ॥ हूं होंत कृनीयां स्वाहा ॥ हूं मधुमायां
 वषट् ॥ कौं मृनामिकायां हूं ॥ कौं कनिष्ठायां वीषट् ॥ नमः कनकलपुष्पा

यां मृन्मायरुद्र ॥ अथ रुद्रयादि ॥ आसनं ॥ ॐ ॥ मृधनादि ॥ हूं प्रतासनपा
 पूजा ॥ हूं सिद्धध्वजदानकपापू ॥ अमृलि ॥ ॐ क्रीं हूं होंत कौं कानमः
 श्रीसिद्धिलक्ष्मीदवीश्रीपापू ॥ ३ ॥ वलि ॥ ॐ ॥ मृधानमृमायवनदविम
 लर्भं श्रीमहालक्ष्मीविश्वश्रीपापू ॥ ३ ॥ वलि ॥ आवाहनादि ॥ हलमृडा ॥
 ॐ क्रीं रुद्रयायनमः ॥ ॐ ॥ आदिषु रंगनपूजा ॥ ॐ ॥ वस्त्राधीकमलेंद्र
 दिगनपूजा ॥ वलि ॥ नृगिकोमानी पूजा ॥ ॥ गनः श्रीकनकपूजा ॥

न्यासा ॥ जै ॥ कुं हृदयादिकनघउंगन्यासः ॥ आसन ॥ जै ॥ आधागादिदा
 जै ॥ गनरास ॥ नायपाप ॥ ॥ आ ॥ ल ॥ जै ॥ नौ नौ नौ ॥ म ॥ श्री नरमहादेववा
 य श्रीहरसिद्धिमहायागिनीसहितायपाप ॥ जै ॥ कुं ॥ कुं ॥ कुं ॥ कुं ॥
 कुं ॥ कुं ॥ कुं ॥ हनसिद्धिमहायागिनीनमःपाप ॥ वलि ॥ ॥ मयूना ॥
 ३ ३ ३ सनायपाप ॥ जै ॥ नौ ॥ नौ ॥ नौ ॥ म ॥ श्री चण्डमहादेववाय ॥
 वं कोमानीभक्तिहतायपाप ॥ जै ॥ कुं ॥ कुं ॥ कुं ॥ कुं ॥ कुं ॥ कुं ॥

कुं श्रीबालकोमानीनमःपाप ॥ वलि ॥ ॥ जै ॥ वृषासनायपाप ॥ जै ॥
 ३ ॥ म ॥ श्री श्री श्री भितांगमहादेववाय ॥ वरमहादेववीदवीस्वभक्ति
 सहि ॥ कुं ॥ तायस्वपनिवातायपाप ॥ जै ॥ म ॥ श्री श्री श्री ॥ म ॥ श्री श्री श्री ॥
 महा ॥ देववीदवीनमःपाप ॥ वलि ॥ ॥ ॥ म ॥ श्री श्री श्री ॥ ३ ३ ३ हा ॥
 त्रया ॥ जै ॥ म ॥ जानाधनदवीप्रदालनीदवीभक्ति ॥ वलि ॥ पिभितमहा
 पूजा व ॥ लि ॥ ॥ ग ॥ २ ॥ म ॥ क ॥ स्वभक्ति ॥ क ॥ २ ॥ ल ॥ २ ॥ ख ॥ २ ॥ खा ॥ हि ॥ २ ॥ क ॥ ल ॥ म

हास्का नाधिपतय वसिं गृह्णन्मन्त्रिस्ताहा ॥ धनं भक्तिं प्रियमूलमज्जदम्भं
 यत् ॥ विन्दुयन्ददत्त ॥ नृति कृतकपूजा ॥ ॥ तता श्रीवृगपूजनं ॥ न्यासः ॥
 जौं जौं सः हृदयादिकेन षष्ठं गन्तासः ॥ ॥ न्यासः ॥ न्यासादिः ॥ जैं जौं
 पद्मासनाय पापपूजा ॥ यः कृतिः ॥ जौं जौं हं नमो नमो ॥ प्रियमूलमज्जदम्भं
 लोकेश्वराय स्वर्गाय वृक्षे लक्ष्मीविनिविना ॥ न्यासः ॥ न्यासः ॥ न्यासः ॥
 यपापूजा ॥ उवलि ॥ विन्दु ॥ जौं जौं सः षष्ठं गन्तासः ॥ यः कृतिः ॥ नृति श्रीवृग

पूजा ॥ ॥ तता श्रीलीमसनापूजा ॥ जैं जौं हृदयादिन्यासः ॥ जैं जौं न्यासादिः ॥
 दिः ॥ जैं जौं हृदयादिन्यासः ॥ न्यासः ॥ जैं जौं हृदयादिन्यासः ॥ न्यासः ॥
 गदाधनं ॥ नक्तवर्षं पीतवासं च ॥ नक्तयस्त्रिपवीतिनं ॥ नानाहस्तलक्षणं
 स्मितवकुलमनाहृतं ॥ प्रहृष्टकमलाहासं ॥ सुचान्द्रयुग्मनयकं ॥ न्यासः ॥
 याम् ॥ ॥ यः कृतिः ॥ जैं जौं जौं जौं ॥ श्रीलीमश्वरमहादेवनाय जौं
 जौं ५४ जौं जौं पदीदवीभक्ति सहिता ॥ यः कृतिः ॥ न्यासः ॥ न्यासः ॥

महादेवये पाप॥ ॐ नमो भूषणनिर्मासदहायेनद्रमकिनककालिउ
 ग्रहपितृगिनये दवदवेष्ट पाप॥ वलि॥ प्रिभूलयानिमद्रांदर्मय
 ॥ विन्दयंदद॥ ॐ नमो दवदवीपूजा॥ ॥ ततश्चयीयघालंषपूजा
 ॥ ॐ नमो ४ मन्त्राय रुद्रया दित्यास॥ ॥ मासन॥ ॐ नमो माधनादि॥
 ॐ नमो सनाय पाप॥ ॐ नमो सनाय पाप॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥
 ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥

नाथयभूषणनिर्मासदहायेनद्रमकिनककालिउ
 मन्त्राय रुद्रया दित्यास॥ ॥ मासन॥ ॐ नमो माधनादि॥
 ॐ नमो सनाय पाप॥ ॐ नमो सनाय पाप॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥
 ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥
 ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥

हातेन वाय रुद्रपालायथा कूलिपूषां पादकां पूजयामि ॥ ३ ॥ वलि ॥ विन्द ॥
 उँ कूँ कौँ कौँ कौँ काटना रुद्र महा कूनाधीपतय कौँ कौँ कौँ श्री काटना रुद्र महा
 रुद्रपालाय कपिला प्रज्ज्वाला नरासूत्र प्रियग्रहा ॥ ३ ॥ लामखच उँ उँ कू
 काय खडा रुद्र रुद्र कूल पानय महा कपाल रुद्र वि ॥ मुक्तिसम प्रल
 य उहीत गवत हेन वरूप धया ॥ आप पना च वलिं रुद्र रुद्राहा ॥ उँ कू उँ मर
 मर रुद्र रुद्र रुद्राहि रुद्र महा दामनाधिपतय मम भानि कू रुद्र रुद्र मभव नदा

मम ॥ पंचमहामूद्रां दर्शय ॥ विन्द ॥ मृसितां गादि ॥ वलि ॥ विन्द ॥ ॐ गि
 काटना रुद्र पूजा ॥ ॥ नरा श्री चधु हेन वरूप पूजा ॥ उँ कू चोँ रुद्र दयादि न्यास ॥
 आसन ॥ उँ कू आधनादि ॥ उँ कू कूनासनाय पाप पूजा ॥ ॥ रुद्र कूलि ॥ उँ
 कू चोँ चोँ चोँ श्री चधु महा हेन वाय पाप पूजा ॥ ३ ॥ वलि ॥ महामूद्रा ॥ विन्द
 ॥ उँ कू चोँ रुद्र दयादि न पूजा ॥ ॥ ॐ त्रिवरु हेन वरूप पूजा ॥ ॥ नरा श्री बानकोमा निप
 जा ॥ न्यास ॥ उँ कू रुद्र रुद्र रुद्र रुद्रादि ॥ ॥ आसन ॥ उँ कू आधनादि ॥ उँ कू म

यूनासनायपाद॥ ॥ शुक्लि॥ जंशवाँवीवूँ व्माँशीवानकोमानीदवीपाद॥ ३ ॥

वलि॥ किमुदोदय॥ विन्द॥ विन्मायदीपापुत्रे ॥ माह॥ कोमा॥ वेपुखी॥ वाना

॥ॐ ह्रीं क्लीं॥ नमो॥ महल॥ॐ शिवानकोमीनीपूजा॥ ॥तताद्वानपूजा॥ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ वलि ॥ विन्दु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ वलि ॥ विन्दु ॥

नमो बलिप्रदाने ॥ ॐ नमो बलिप्रदाने ॥ ॐ नमो बलिप्रदाने ॥

य वलिगुडर स्वाहा ॥ जेणपनमीदीप दम्कीदवीमहाध्वजकृष्णपाल

ॐ ह्रीं वस्त्रा नाधिपतय यथा ॥ नाम्नि मल्ल लम ॥ अवतन २ च दृष्टि का पि न

अथैवमस्मिन्नादिनामजप्रवृत्तौ नामनिमित्तकलक्षणस्वरूपान्नरचक्रउज्ज्वलम
अथैवमस्मिन्नादिनामजप्रवृत्तौ नामनिमित्तकलक्षणस्वरूपान्नरचक्रउज्ज्वलम

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् । अथ श्रीगणेशस्तोत्रम् ।

हिरण्यवन्तरेन वद्रूपं यत्पपन्नानवल्लिष्टं २ मम विधाच्छादय अक्रा

यवाले गृह २ स्वाहा ॥ जे १५ खा सिह न द्वा पि कु ना द व मि हा यी ग्रा क्रि यु पा ला यि वा ल
म २ स्वाहा ॥ जे १५ खा सिह न द्वा पि कु ना द व मि हा यी ग्रा क्रि यु पा ला यि वा ल

[illegible]

१७ बृहन्नथाय वलिगुट्टर स्वाहा ॥ जेज गभगी गूंग ४ (सो कूलग) (सर्वनायव
विमल असादा ॥ २० ॥

लिङ्गद्वयस्वाहा पुनः पुनः महाकालाय वलिङ्गद्वयस्वाहा ॥ जै ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मूअथेवलिङ्गकरस्वाहा॥लिङ्गद्वैतमहाकनवीनममभैनाधिपतउयवलिङ्ग

ॐ स्वस्ति ॥ जै ग सर्वथा देव था वलि मृदु २ स्वस्ति ॥ जै ग सर्वथा देव था वलि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २

क्रस्कायथागिनीगणसहितायसंगभयसगणपरिवानाय ॐ देमयापूष्यधूपदीपभूलि
 वलिपल्लमहापूजावलिगृह २ सर्वार्थसिद्धिप्रयत्नकृदं स्वाहा ॥ १ ॥ जे १ वृ १ कं रं गं धं दं
 श्रीवन्दनक्रयाय नृनरेनवायमाहध्वनीभक्तिसहिताये कर्तव्यकृदं स्वाहा ॥ २ ॥ क्रस्कायथागि
 नीगणसहितायसंगभयसगणपरिवानाय ॐ देमयापूष्यधूपदीपभूलि वलिप
 ल्लमहापूजावलिगृह २ सर्वार्थसिद्धिप्रयत्नकृदं स्वाहा ॥ ३ ॥ जे १ वृ १ कं रं गं धं दं
 कालापूनीक्रयाय नृनरेनवायकोमानीभक्तिसहिताय विवि १ वृ १ कृ १ स्काय

यागिनीगणसहितायसंगभयसगणपरिवानाय ॐ देमयापूष्यधूपदीपभूलिवलिप
 ल्लमहापूजावलिगृह २ सर्वार्थसिद्धिप्रयत्नकृदं स्वाहा ॥ ३ ॥ जे १ वृ १ कं रं गं धं दं
 श्रीभद्रहासक्रयाय कृ १ नरेनवायवेकूवीभक्तिसहिताय निम्बकृदं स्वाहा ॥ ४ ॥ यथागिनी
 गणसहितायसंगभयसगणपरिवानाय ॐ देमयापूष्यधूपदीपभूलिवलिपल्लमहा
 पूजावलिगृह २ सर्वार्थसिद्धिप्रयत्नकृदं स्वाहा ॥ ४ ॥ जे १ वृ १ कं रं गं धं दं
 क्रयाय उन्मकृदं स्वाहा ॥ ५ ॥ नरेनवायवानाहिभक्तिसहिताय भूवक्तृ १ वृ १ कृ १ स्कायथागिनी

गङ्गासहितायसीगभयसगङ्गापनिवानाय०००दमयापूष्यधूपदीपअलिवलिपलल
 महादेजावलिगृह्ण२सर्वार्थसिद्धिप्रयत्नकृत्स्वाहा॥१॥ॐगङ्गापूष्यधूपदीपअलिवलिपलल
 निजकजायकपालहेनवाय०००दायणीस्वभक्तिसहितायदू०००चलवृत्तस्काय
 यगिगीगङ्गासहितायसीगभयसगङ्गापनिवानाय०००दमयापूष्यधूपदीपअलिवलिपलल
 महादेजावलिगृह्ण२सर्वार्थसिद्धिप्रयत्नकृत्स्वाहा॥२॥ॐगङ्गापूष्यधूपदीपअलिवलिपलल
 मुक्तकजायरीसगङ्गाहेनवायवामुमुभक्तिसहितायताल०००वृत्तस्कायय

६ पूर्वदि०००भनार्क॥३॥वावृलीहेनवायवलिगृह्ण२स्वाहा॥०००तिअगितांगमदि
 ३॥ ॥मध्यवावृली॥ ॥३॥अधानजमाधवनदविमलेश्वरीवक्रालीविब

गिगीगङ्गासहितायसीगभयसगङ्गापनिवानाय०००दमयापूष्यधूपदीपअलिवलि
 पललमहादेजावलिगृह्ण२सर्वार्थसिद्धिप्रयत्नकृत्स्वाहा॥१॥ॐगङ्गापूष्यधूपदीपअलिवलिपलल
 दवीका०००कजायसीहानहेनवायमहालक्ष्मीभक्तिसहितायवटवृत्त०००स्काययगि
 गीगङ्गासहितायसीगभयसगङ्गापनिवानाय०००दमयापूष्यधूपदीपअलिवलिपलल
 ललमहादेजावलिगृह्ण२सर्वार्थसिद्धिप्रयत्नकृत्स्वाहा॥२॥०००तिप्रयागमदिवलि॥
 ०००॥तत०००वृत्त०००दिवलि॥ॐगङ्गापूष्यधूपदीपअलिवलिपलल॥ॐगङ्गापूष्यधूपदीपअलिवलिपलल
 वलिगृह्ण२स्वाहा॥तथेव॥माहृष्यनी॥कीमानी॥वेष्टुवी॥वानाही॥०००द्रायली॥
 चामुखा॥महालक्ष्मी॥सर्वपूर्ववशा॥०००तिमातृकागव॥१॥

प्रचक्षुष्येवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अथ येवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ पुना
 यिकायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अथ येवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अथ येव
 लिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अथ येवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अतिवलि
 कायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ ००० ति नृपवधुदिवलि ॥ ००० ॥ ततो जयादिवलि ॥ जै ० उं पुं च ॥
 येवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ विजयायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अतिगायेवलिगृह्ण
 २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अतिगायेवलिगृह्ण

३ पूर्वादि ००० ॥ ००० ॥

२ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥
 हन्येवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥
 वलि ००० ॥ जै ० उं पुं च ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥
 नाय ००० दमयापू ००० ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥
 मूर २ ल २ खर २ ००० ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥
 वर्धनधन्यलारी ००० ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥
 ४ उं हर्कुवः स्व ४ स्वाहा ४ ००० ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥ अतिगायेवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ जै ० उं पुं च ॥

२२
वलि॥ ॥ समयकाय॥ अलिमसहलुवल्यां अरिक्किन्नकलीदापयद् ॥ ॥
जेंगसर्वपीअपपीअनि, दानापदानमवत्त ॥ क्रुणपक्रुणसंदाहाः सर्वदिग्गंगा
संस्किता ॥ यागिणीयागवीनद्या, सर्वतत्समागता ॥ ॐदपर्वमहाचक्रा
नाथवतदामम ॥ यरुक्रुणससंभदवी, गुनपादावन्नरगा ॥ सर्वसिद्धिप्रसा
दाम, दवीरगौरवत्सदा ॥ वीनकर्मयागिणीनीच, यविषयं किमहितल ॥
गतयानैवलीदवी, समयाचानमनक ॥ अतिस्मृतिमनपूर्णि, मीसमद

२२३
स्कितीवर्त ॥ निःकृतयन्मुदूषानी, यागिणीगणसंकला ॥ कूककादिकस्वप्रा
नि, दुर्निर्मित्यदूरायिता ॥ निःकृतयन्मुदूषानी, यागिणीगणसंकला ॥ उ
कागादिकयपीअ ॥ उयसानाष्टकीर्तिता ॥ उअधीधगुसंदाहा, दिग्ग
सर्वदिग्गंगासर्व ॥ महीपातालवक्त्रा ॥ ॐ, सर्वस्मान्ननयूच ॥ यागिणीया
गयूकात्मा, समतिष्ठनिसाधका ॥ वीनकर्म ॥ सूवीनद्या ॥ सत्यतिष्ठनि
देवता ॥ सिद्धाष्टपूजाचार्या ॥ साधकाक्रितिसायित ॥ नगनवाथ

गमवा अष्टवी वामनी धर्य ॥ वापिकू पेकचक्रवा ॥ ममभनमाष्टमधुल ॥ ना
नानूपधनीन्यपि वटजा विविधनिच ॥ तसर्वेऽपिचसंगुष्टा वलिगुट्टकनु
सर्वदा ॥ सनभगताप्यहंगयी सर्वमतल्लपदै ॥ पालद्वैयत्तयाकर्म
यत्कनिष्ठासियत्करी ॥ वलिपूष्यप्रदानन संगुष्टाममचिन्तक ॥ सर्व
कर्मानि सिद्धन्तु सर्वदा सप्रभानयत ॥ भिवभकिप्रदानन श्रीक
कालार्कनमोम्यह ॥ जांझीझं महाभक्ति केनू २ दूँ ३ रुट् वलिगुट्टक २ रुवा

[illegible]

गक^१धु प्रच^२दु^३कानक^४॥वीनसिंहाटकूजको भयरासूनयूगभनक^५॥ना
 नवधुलेम्वो^६धु वृणलधुकगु^७धुक^८॥खणालाक^९सुनाक^{१०}धु दूदूक^{११}कपनसुथ^{१२}
 ॥पंचा^{१३}लकृणपाल^{१४}ध्यानप^{१५}भनमा^{१६}मुत^{१७}॥पंचा^{१८}धचमहाकृण^{१९}निधिपद^{२०}धु
 सैसिता^{२१}॥चतुर्वी^{२२}कृतया^{२३}कच^{२४}रेनवारन^{२५}धचिती^{२६}॥पथक^{२७}भमुनूप^{२८}सर्वकीका
 यविद्युना^{२९}॥भूजनादिमहाकृण^{३०}ककाना^{३१}नमा^{३२}म्यह^{३३}॥सैं^{३४}कौ^{३५}कौ^{३६}कौ^{३७}कौ^{३८}भूजना
 दिकृणपालायवलि^{३९}टक^{४०}स्वाहा॥गूतिभूजनादिवलि^{४१}॥॥गत^{४२}वलि^{४३}

यागिणीवलि॥ ॥सैं^१च^२अघ^३भमहानासा^४दूर्मूर्खीसू^५मूर्खीगथा^६॥नवती
 पथमाधाना^७सोम्यारी^८सामहावला^९॥जयाच^{१०}विजया^{११}चेव^{१२}भूजिता^{१३}अपना^{१४}जिता
 ॥महात्कण^{१५}विनूपा^{१६}की^{१७}धुष्का^{१८}वाका^{१९}भामा^{२०}टका॥जातहानी^{२१}सैकानी^{२२}च^{२३}द्विष्टाली^{२४}धु
 कनवती॥पिपलीपूष्यहीनी^{२५}च^{२६}भूषणी^{२७}भस्य^{२८}हानिणी॥रुद्रकानी^{२९}सूरडा^{३०}च^{३१}र
 डारीमा^{३२}सूरडिका॥घाति^{३३}भमकु^{३४}मानूरा^{३५}कर्णिका^{३६}पाल^{३७}धनिणी॥घाति^{३८}भस्य^{३९}म
 हायानी^{४०}धुष्क^{४१}मूधु^{४२}भवा^{४३}भनी॥सैं^{४४}अधान^{४५}ज्वा^{४६}थधान^{४७}ज्वा^{४८}थधान^{४९}नक^{५०}नदू^{५१}दू^{५२}

सर्वतः सर्वसर्वं कुंशं सः कुंशं नृपकृदाणि भयागिनीयावलिगुट्टकस्वाहा
॥००॥ तिवक्ति भियागिनीवलि ॥ ॥ ततः ॥ प्रोभधीयागिनीवलि ॥ ॥ जयाचवि
जयाचैव जयनीचापनाकिता ॥ नन्दाहृदागधारीमा कलाचैवाष्टकागध ॥ ८ ॥
दिवायाग्रीमहायाग्री सिद्धियाग्री गणेश्वरी ॥ साकिनी कालनाथी च उर्ध्व
कणी निष्प्रकरी ॥ ९ ॥ गम्हीनाद्याषणी स्कूला पवनी गीतलामिका ॥ हीरवा
वमहानन्दा दालामूरिवतथैव च ॥ १० ॥ पिम्पवीरुस्मिनी चैव यक्रणी धूर्कणीत

ॐ ॥ विसरु क्रि सर्व सिद्धि तुष्टि ॐ नमो भगवते ॥ ८ ॥ दूकानी राखनी दीर्घा धूमा
क्री कलरु प्रिया ॥ मारी गी का कट छी च. गथमि पूनवान कका ॥ ८ ॥ नाक सी धान
नादा च. नका क्री विभव नू पिणी ॥ ऊय कनी नोदवी रस्मी शुष्का झी नन राऊनी ॥
८ ॥ वीन हडाम हा कालि. की काली विक्रान नना ॥ काटनाली मरुडा च. वायू वंगम रु
यान नना ॥ ८ ॥ वाष्मी च वेष्मी वी नोडी चर्चिका ॐ श्वनी राथ ॥ वानाही नान सि
हिं च. मिवा दूगि च तुष्टि ॐ ॥ ८ ॥ ॐ दैदवी महाया ग्री वलिं गट्टन कुम सदा ॥

धनपुत्रयज्ञयाव अष्टादि यति उ उ वलि

शं कय रवाया गया २

जें क्रीचवसथियागिनीयावलिंठ २ सर्कभ किं कुर २ मम सिद्धि कर्व कुं
दुष्टाह ॥ ॐ तिचवसथियागिनीवलि ४ ॥ ५ ॥ गतामहावलि ॥ जें क्रीचव
सो ॥ श्रीगुरुपादुको पूज्यामि ॥ जें कवर्क के काम नूपी पुन विपुन ग उ
गाजालपी ॥ ० रुय न्या च का ॥ ० मभपी ॥ ० निपुन पुन गता द विष्णु गन कान
॥ आचार्य सिद्धि सी गप निवृत्त प्रवृत्त सथिया गिन्य द द यू के द त्यं क ज व
उल लक सह्या द व द वी न मा मि ॥ १ ॥ या ह दिव्या न नि क द ण दि भ यु व न

२४९

सफपागालमूल कशापी ॥ ० पपी ॥ ० विषम च गुप ॥ ० मलकला भमभन ॥ सि
॥ श्री गीने क वृ क उ द विष्णु र त द धू मु काला व गान को लूल द र्क गी र्या ग ग न पू
न व न उ ॥ ० गिया न पु भान ॥ २ ॥ जाल भव गग मुख कूल पति न ग न काम नूप
स्वरूप उर्कान्या म रु हा स पट् पट्ट स कला उ द ॥ ० प्र द ॥ ० श्री ॥ ० ल पा लि जा
ग प गु प ति नि ल य ह म वि च ल य श्री मला चा ग द ॥ ० म नू रा प थ गि नी ला
कि नी भ कि नी नी ॥ ३ ॥ का मि न चा न्द द ॥ ० वि द म ल प ॥ ० व द्म वा ग कूल

[illegible]

सुसुम्न निपूष्पं वलिपनिस्तु जयं सूरनं सर्व दिद्या ॥ दीर्घायुर्थक विस्व निधि
न सगुटि कीपादूकी काम सिद्धिं सर्वो धिनान्दयकु अलिवलि पिणिगारे न
वानान्ययूक्ता ॥ ७ ॥ दुष्ट (धोना विमात्रिय हगगगग (६) विद्युत्पात न (६) वा
नाज्ज्वा नज्ज नोध विघटय गुरय्य्या धिरीवर्म मूढ ॥ कौं कौं रुद्रका नयनी
हृहृहृहृ सिंगे, अर्धयनी पिवनी, श्ययनी मनुमाता किलिमिलि चिकि
लि ४ कोलराया भितनी ॥ १ ॥ सा शुक्का काम नू पायलवण ख सह हारुदू

[illegible]

पूजय ॥ ॐ क्री नानः शिखाधूमनूपिल्लभौ गच्छिनी सर्वदेवानां सानिध्वक निध्व नमः ॥ मज
१० वृष ॥ वनस्य शिरः ॥ मरुतं नानागन्धेषु प्रीति ॥ आधुय सर्वदेवानां प्यर्त्तः

२४६

दीपार्थप्रतिगृह्यतां ॥ ॥ दीप ॥ सुप्रकाशप्रदीपं सर्वगतिमिनाप
दं ॥ सराशून्यकनैः प्रतिदीपार्थप्रतिगृह्यतां ॥ ॥ नेत्राद्यभ्युपेक्षणं ॥
यानाकाय ॥ अन्तर्महानसंदिग्धं न संशयं ॥ समन्विता ॥ मयानिवदि
तं तुल्यं गृहानपवमं ॥ ॥ रुलमूलादि ॥ रुलैरुलादिमूलादि
०० रुकैलादि सर्वं ॥ अस्वदादिमपकान्तां जाम्बीनेप्रतिगृह्यतां ॥

दीप प्रकाश ॥ हृद् ॥ अथ यत् ॥ उँ नौ नौ नूँ नै नौ नः ॥ काति रूप मिखाये व म दूँ ॥ पूजये

२१४

र्थपादः॥ ॥मधुलीपञ्चपूष्यावकीर्ण॥साग॥सीगुनरथानमः॥अखद्युम
 दुलाकोले वार्फथनचनचन॥तत्पदद्वितीयेन तस्मैसीगुनवेनम
 ॥॥वन्द्यमयकलकोलिकसानरुत॥क्रुण्वनननकपालकदाम्बमाल
 ॥रवदीगरवञ्चनरुटककाशरुत॥द्वानस्मितीतिगुव(सस्वनवल्लराया
 ॥॥क्रुण्वया॥१॥सीसाधनवटुकनाथ॥सिधमिद्ध॥स्कन्द॥सूत्रात्रिजन
 काननधमकैयु॥॥गोत्रीसूत॥सगतिसुहृलतादधना पोयात्सर
 नुविधहापक्तनालि॥॥॥अन्तेषु तुविध्वेव नमः षड्विः समन्वितं॥मया समर्पितं तु ह
 गृहाण पनमभ्यनि॥ ॥अमृत॥॥॥मदमकमहामाथ वातुरासीत्फसागनाः॥गृहाण

२५५

कवसनाभिषिवाहनाव॥वटुकया॥२॥सिन्दूरमाद्युमदमूर्च्छितनक
 कूर्तं निरुगतघनाघनययाधनदहलक्ष्मी॥विहृत्कभनवनमाजकमा
 क्रसुखं पायोदयंगणपति॥सकलार्थदाता॥ग(सया॥३॥॥॥॥
 अनाथतवपादयुंगीनमामि चञ्चिअनाथचनधम्वुजकैपुपेय॥म
 नीअनाथगिरिमञ्चनमानजेष्टा मुष्टुद्धिदवगुनकैसरतेनमामि
 ॥विष्टुद्धिया॥४॥उकानाध्वयपादादसकमलयुजावादनश्चामिलि

कपः
 गग
 उताक्य
 रुष्टिका
 निनी॥